अंक -6, दिसंबर 2024

पर्यावरण संवाद

प्रकृति एवं देशज संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए

पर्यावरण के प्रहरी थे विनोद रंजन!

जाने वो कौन सा देश, जहाँ तुम चले गए

- पूनम रंजन

कहाँ से शुरू करूँ, कुछ समझ नहीं आ रहा है। हाँ, भाई पुरषोत्तम की फेसबुक पर डाली गयीं पक्तियां (विनोद रंजन जी के मृत्यु उपरान्त) मुझे बार-बार जरूर याद आती है – "विनोद रंजन जी से कई बार हँसते हुए मैं मिला। साथी हमेशा स्वस्थ मिलते। फिर ऐसे बीमार पड़े कि सीधे स्वर्गलोक को गमन कर गए।" अपने काम, अपनी संस्था, संगठन के प्रति पूर्णरूप से समर्पित व्यक्ति (कार्यकर्त्ता) को भगवान ने क्यों इतनी जल्दी बुला लिया। जी हाँ, उनकी पहली प्राथमिकता काम और समाज था, फिर उसके बाद घर परिवार!

माफ करिएगा, मैं पूनम शांडिल्य। जी हाँ, शैक्षणिक प्रमाण पत्र में मेरा यही नाम है। मैं विनोद रंजन जी के जीवन में 11 जून 1997 को आयी, तो उन्होंने मेरे मतदान कार्ड, आधार कार्ड और पैन कार्ड हर जगह पर मेरा नाम पूनम रंजन करवाया। इनकी जीवन साथी बनने के बाद मैंने यही अनुभव किया कि यह व्यक्ति तो सिर्फ और सिर्फ अपने काम, अपनी संस्था, संगठन के प्रति समर्पित हैं।

जहाँ तक मुझे पता है विनोद जी 1974 में लोक नायक जयप्रकाश नारायण के द्वारा संचालित आंदोलन में खूब सक्रिय थे। उस दौरान बाल कैदी के रूप में कई बार जेल यात्रा भी की। आपातकाल के दौरान भूमिगत भी रहे। 1978 में जयप्रकाश नारायण के द्वारा संचालित "छात्र युवा संघर्ष वाहिनी" के संगठन में भी सक्रिय रहे। 1978 से 1982 तक बोधगया "भूमि मुक्ति आंदोलन" में भी काफी सक्रिय रहे और पुलिस प्रताड़ना के भी शिकार हुए 1982 से 1991 तक "गंगा मुक्ति आंदोलन" के निर्माण के समय से आंदोलन में प्रशिक्षण एवं संगठनकर्त्ता के रूप भी सक्रिय रहे। "बचपन बचाओ आंदोलन" में कैलाश सत्यार्थी जी के साथ भी जुड़े रहे। 'एक्शन एड', 'क्राय' के साथ भी जुड़े थे। पी.यू.सी.एल. और एन.ए.पी.एम. से भी जुड़े रहे। श्री ब्रज किशोर स्मारक प्रतिष्ठान के अध्यक्ष भी रहे। वर्तमान में मंत्री, बिहार स्टेट गाँधी स्मारक निधि; राज्य सचिव, राष्ट्र सेवा दल; राज्य उपाध्यक्ष, बिहार, सर्वोदय मंडल के रूप में कार्यरत थे।

इतने सारे संस्थाओं और संगठनों की जिम्मेवारी को सफलतापूर्वक निभाते हुए यदि थोड़ा सा समय अपने स्वास्थ्य और घर-परिवार पर भी देते तो आज वे हम सब के बीच होते।

अंत में खोकर पता चलता है हीरे की कीमत! हीरा चला गया। याद आती है गीत की यह पंक्ति –"जाने वो कौन सा देश जहाँ तुम चले गए।" ■

विषय क्रम

संपादक
घनश्याम

संपादक मंडल
उदय
अबरार ताबिन्दा
पूनम रंजन
सीमांत सुधाकर
महेश मिश्रा
तहा सैफुद्दीन
सालगे मार्डी
कोर्दुला कुजुर
ऐनी टुडू
श्रावणी
शशि बारला
मति मुर्मू

संवाद सूत्र
मालती कुमारी
अश्विनी महाराणा
संजय समीर एक्का
आनंद मरांडी
कुंदन कुमार भगत
सीमा
सुशीला हेम्ब्रम
मिनीला बास्की

कला संपादक
शेखर

आवरण चित्र
सीताराम

साज-सज्जा
जमील, राकेश व जावेद

संपादन कार्यालय
पर्यावरण कक्ष "संवाद" 52 बीघा,
मधुपुर, झारखण्ड
की ओर से प्रकाशित
मुख्य कार्यालय
'संवाद', 104/A उर्मिला इन्क्लेव,
पीस रोड, राँची - 834001
www.samvad.net

घनश्याम द्वारा संपादित एवं प्रकाशित तथा
आई.डी.पब्लिशिंग, राँची द्वारा मुद्रित
सीमित प्रसार

- **वेदना - संवेदना**
  एक संवेदनशील पर्यावरणविद् थे विनोद रंजन - **सत्यनारायण प्रसाद** 5
- **एक साधक**
  एक सच्चे सर्वोदयी थे विनोद जी - **महेन्द्र यादव** 7
- **चिंता - सहचिंतन**
  गंगा की मुक्ति और जल श्रमिकों के पहरूए थे विनोद रंजन - **योगेन्द्र सहनी** 9
- **धीर - गंभीर**
  कार्यकर्ता हो तो विनोद रंजन जैसा - **ललन** 10
- **घुमंतु - एक्टिविस्ट**
  विनोद रंजन : अभाव में भी मुस्कुराता एक संगठनकर्ता - **उदय** 12
  विनोद रंजन: एक साधारण परिवार का असाधारण नेतृत्वकर्ता - **गौतम कुमार** 13
- **सबक और सवाल**
  विनोद रंजन : क्या भूलूं, क्या याद करूँ? - **डॉ उमेश मुरैल** 15
- **कालजयी कार्यकर्त्ता**
  बिहार एवं झारखंड के बीच एक सेतु थे विनोद जी - **रमण कुमार** 16
- **सहयात्री**
  विनोद रंजन: एक समर्पित समाजसेवी और गांधीवादी विचारधारा के अनुयायी - **गुलाब चन्द्र** 17
  बेहद संवेदनशील थे विनोद जी - **सीमान्त** 18
- **विचार - यात्रा**
  गांधी, लोहिया व जेपी के भक्त थे विनोद रंजन - **महेश मिश्रा** 19
  साहसी एवं दयालु व्यक्ति थे विनोद रंजन - **राजकुमार** 19
- **नम्र - विनम्र**
  तोको कहां ढूंढु रे बंदे - **कारू** 20
- **जाति न पूछो साधु की**
  विनोद रंजन : एक हंसते-मुस्कुराते जीवन के जाने की व्यथा - **डॉ योगेन्द्र** 21
  गांधीवादी विचारधारा पर चलने वाले सामाजिक योद्धा थे विनोद रंजन - **सुनील सरला** 22
- **हंसा उड़ि गयो परदेस**
  असमय दुनियां से चला गया हमारा प्यारा साथी - **अनिल प्रकाश** 23
- **झीनी-बीनी चदरिया**
  विनोद रंजन का जाना.... - **शाहिद कमाल** 24
  वैसा अनोखा आदमी मुझे अभी तक नहीं मिला - **प्रभाकर कुमार** 25

विनोद रंजन ...महज एक नाम नहीं

एक हंसता, मुस्कुराता और खिलखिलाता इंसान था विनोद रंजन! जो महज एक नाम नहीं था बल्कि इंसानियत की पहचान था। पटना का एक ऐसा ठिकाना था, जहां कोई भी, कभी भी, जैसे भी पहुंच सकता था। लेकिन अब वह ठिकाना वीरान हो गया है...।

वह पटने और पटाने वाला इंसान आज से ठीक साल भर पहले हम सबों को अलविदा कह गया। हम सबों ने उसे अलविदा नहीं कहा। कह भी नहीं सकते थे हम सब उसे अलविदा! और सच कहूं तो आज भी जब पटना की चर्चा होती है तो लगता है वह आसपास कहीं मुस्कुराते हुए सुन रहा है और लगने लगता है कि वह आएगा और कहेगा हमारा 'मटन' किधर है ? मटन से इतना प्यार मैंने अन्य किसी भी साथी में नहीं देखा।

लेकिन आश्चर्य की बात यह है वह सिर्फ मटन से ही नहीं प्रकृति के हर उपादानों वैसा ही प्यार करता था और प्रकृति तथा इंसानियत के हर संघर्षरत इंसान से भी वह दिलोजान से लगाव रखता था। बुनियादी परिवर्तन की जो भी धारा हो, सबों से उसे गहरा लगाव था और सबों को उससे मिल्लत थी। यानी यह कह सकते हैं कि आंख मूंद कर विश्वास करने वाला इंसान का नाम था विनोद रंजन!

बिहार और झारखंड का कोई संघर्ष या कोई फिर कोई भी अभिक्रम हो वहां अगर एक कॉमन नाम मिलता तो वह नाम होता – विनोद रंजन का ! आपको जिनका भी पता या मोबाइल नंबर जानना हो, वह आप बेहिचक उससे ले सकते थे।

भारी भरकम कद-काठी का वैसा फुर्तीला आदमी शायद ही मिलता है। कुशहा से कुरसेला तक की कोशी पदयात्रा इसका गवाह है कि नदी, पानी, प्राकृतिक परिवेश और एकीकृत बिहार तथा नेपाल के भूगोल की एक गहरी और गंभीर समझ थी विनोद के पास। लेकिन महज समझ ही नहीं बल्कि एक आत्मीय सरोकार भी था।

इसीलिए हम सब यहां यह कह रहे हैं कि विनोद रंजन पर्यावरण का प्रहरी था। विनोद रंजन को हूल जोहार! आखिरी सलाम!

एक संवेदनशील पर्यावरणविद् थे विनोद रंजन

- सत्यनारायण प्रसाद

जल, जमीन एवं जंगल के संवर्द्धन के साथ-साथ उत्तर बिहार को कोशी, कमला बलान एवं अधवारा समूह की नदियों में आने वाली बाढ़ एवं कटाव से उत्पन्न त्रासदी से जनजीवन के लिए राहत और विकास में सहयोग देने दिलाने में बिहार प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष स्वर्गीय विनोद रंजन जी की सक्रिय भूमिका एवं योगदान अति ही सराहनीय तथा प्रशंसनीय रही है।

तथ्यों के आधार पर मैं पूर्ण आत्मविश्वास एवं गर्व से कह सकता हूँ कि सम्पूर्ण क्रान्ति एवं सर्वोदय के नेता स्वर्गीय विनोद रंजन जी बहुत ही सुलझे हुए एवं संवेदनशील पर्यावरणविद् थे, जिसका अभाव संघर्षशील कोशी पीड़ित मुक्ति मोर्चा के साथियों और व्यक्तिगत रूप से मुझे खटकता रहेगा।

मैं कोशी नदी के दोनों तटबंधों के बीच सुपौल जिला के प्रखंड सरायगढ़-भपटियाही की ग्राम - पंचायत ढोली के मौजा भुलिया का रहने वाला हूँ। ढोली पंचायत दोनों कोशी तटबंधों के निर्माण काल से अभी तक कोशी नदी की बाढ़-कटाव से पूर्णतः पीड़ित है। मेरे दादा एवं मेरे पिता जी स्वर्ग सिधार गये एवं मैं तीसरी पीढ़ी में हूँ। तीन पीढ़ियों की अवधि में यह पंचायत अनगिनत बार कटाव एवं विस्थापन के शिकार हुई। विनोद जी से मेरा शुरू से लगाव था। वे बाढ़ पीड़ितों के प्रति बहुत ही संवेदनशील थे। वे मेरे इस गाँव में 1982 ई० में आये और कोशी नदी की बदलती धाराएँ, कटाव एवं विस्थापन का अध्ययन कर यहाँ की जनता की बदहाली से बहुत ही व्यथित हुए।

विनोद जी शुरू से लोक नायक जयप्रकाश जी के सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन के सशक्त जुझारू और क्रांतिकारी नेता थे, जबकि मैं शुरू से ग्रामदान, भूदान एवं सर्वोदय आन्दोलन से जुड़ा हुआ था। हम दोनों में वैचारिक एकता के कारण बराबर मिलना-जुलना होता था।

कोशी नदी बिहार की शोकनदी मानी जाती थी और दोनों तटबन्धों के भीतर बसे बिहार प्रान्त के सहरसा, सुपौल, मधुबनी, दरभंगा, खगड़िया, मधेपुरा और भागलपुर आदि जिलों में बसे हुए 350-351 गाँवों के लिए आज भी कोशी शोक नदी है।

औसतन कोशी नदी की बाढ़ एवं कटाव से प्रत्येक साल डेढ़ से दो दर्जन गाँव विस्थापित हो जाते हैं और वहाँ के जन-जीवन अपनी खेती आधारित जीविका से पूर्णतः वंचित हो जाते हैं। अभी कुछ वर्षो से कई भौगोलिक कारणों से गाँवों का कटाव एवं विस्थापन में थोड़ी कमी आई है। किसान मजदूरों एवं यहाँ समस्त निवासियों की जीविका सबंधी समस्याओं के वैकल्पिक निदान के लिए विनोद रंजन जी बराबर मुझसे तथा बांध के भीतर के गांवों में आकर प्रबुद्ध नागरिकों से बैठक कर कोशी क्षेत्र के जलवायु, जैविक एवं भौतकीय मुद्दों पर परिचर्चा करते थे।

4 सितम्बर 1984 को सहरसा जिला के गव्हा अंचल के ग्राम 'हेमपुर एवं नौलखा' के नजदीक कोशी नदी का पूर्वी तटबंध टूट गया, जिससे सहरसा एवं मधेपुरा जिले के नवहट्टा, महिषी, सिमरी बख्तियारपुर, सलकुआ, सौर एवं सोनवर्षा आदि प्रखंड पूर्ण रूप से बाढ़ से प्रभावित हो गया।

बाँध टूटने के चौथे दिन में अपनी संस्था निर्मली प्रखंड स्वराज्य सभा के कुल 31 कार्यकर्ताओं और सदस्यों के साथ हेमपुर गाँव के दक्षिण बाँध पर डेरा डाला एवं सर्वप्रथम सफाई अभियान शुरू किया गया तथा बाँस एवं बोरा का छोटा-छोटा शौचालय बनवाना शुरू किया। तत्पश्चात् बाढ़ प्रभावितों को राहत के लिए सोसाईटी फॉर डेवलपिंग ग्रामदान के संचालक स्वर्गीय प्रेम भाई, स्वर्गीय विकास भाई एवं पर्यावरणविद् डॉ० डी०के० मिश्रा जी

ने अपना-अपना योगदान दिया। इसमें स्वर्गीय शिवानन्द भाई का योगदान एवं सहयोग भुलाया नहीं जा सकता है।

उक्त बीहड़ परिस्थिति में भी विनोद रंजन जी इस कोशी बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में मुझसे मिलने एवं बाढ़ पीड़ितों की स्थिति का जायजा लेने आते रहे। मानवता के प्रति संवेदनशील होना और उनकी सुरक्षा एवं विकास के लिए सोचना यह विनोद रंजन की मानवता को दर्शाती है।

4 सितम्बर 1984 से लेकर मुझे महिषी एवं नवहट्टा क्षेत्र में मार्च 1985 तक रहना पड़ा। मैंने स्थानीय बाढ़ पीड़ित नेताओं के साथ मिलकर महात्मा गाँधी जी की पुण्य तिथि 30 जनवरी 1985 से जिला मुख्यालय सहरसा में जिलाधिकारी के समक्ष कोशी समस्याओं के निदान के लिए प्रदर्शन करने का निर्णय लिया। 30 जनवरी 1985 को कोशी पीड़ित मुक्ति मोर्चा के बैनर तले बाढ़ पीड़ितों का बड़ा प्रदर्शन किया गया, जिसमें सम्पूर्ण क्रान्ति के नेता विनोद रंजन जी का बहुत बड़ा सहयोग एवं योगदान था। बाद में हर साल विनोद रंजन जी 30 जनवरी से एक सप्ताह पहले पहुँचकर हमलोगों के जिला मुख्यालय सहरसा के समक्ष प्रदर्शन में मदद करते थे। महात्मा गाँधी जी की पुण्य तिथि 30 जनवरी 1985 से 1991 तक जिलाधिकारी सहरसा के समक्ष कोशी पीड़ितों का प्रदर्शन होता था, जिसमें मार्गदर्शन के लिए किसी वर्ष राष्ट्रीय सर्वोदय नेता प्रेम भाई तो कभी अखिल भारत रचनात्मक समाज की नेत्री निर्मला देशपाण्डे भाग लेती थीं। स्थानीय विधायक विनायक प्रसाद यादव और हरि साह भाग लेते थे। इस प्रदर्शन को सफल बनाने में भाई विनोद रंजन की बड़ी भूमिका रहती थी।

तत्पश्वात अकसर सहरसा महिषी, सिमराही एवं सुपौल में आयोजित कोशी पीड़ितों की आयोजित वार्षिक बैठक में देश के संस्था जगत के जाने माने चर्चित नेता श्री घनश्याम भाई जी के साथ-साथ विनोद रंजन जी भी भाग लेते थे तथा अपना मार्गदर्शन देते थे।

18 अगस्त 2008 ई० को भारत-नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र नेपाल के ग्राम कुशहा में कोशी नदी का पूर्वी तटबंध टूट गया, जिससे नेपाल के सुन्सरी जिला के साथ बिहार प्रान्त के सुपौल, अररिया, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया एवं कटिहार जिलों के अधिकांश भूभाग जलमग्न हो गया। जानमाल, फसल एवं घर द्वार की बड़े पैमाने पर क्षति हुई। उस समय के सभी दैनिक अखबारों एवं पत्र पत्रिकाओं में लोगों, पशुओं आदि की मृत्यु, घरों के अनाज एवं अन्य सामग्रियां बहने से संबंधित जो आकड़ा प्रकाशित हुआ है वह बहुत कम था।

उक्त बाढ़ एवं विस्थापन अब तक की कोशी के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी कही जा सकती है। देश दुनिया की बड़ी-बड़ी स्वयं सेवी संस्थाओं ने अपनी-अपनी क्षमता के मुताबिक राहत विकास का काम किया।

देश की संस्था जगत के ख्याति प्राप्त नेता घनश्याम भाई जी ने सहरसा, सुपौल एवं मधेपुरा जिलों के अत्यन्त बाढ़ प्रभावित प्रखंडों में राहत विकास का काम उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है।

घनश्याम भाई जी के सहयोग से सर्वोदय एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के नेता विनोद रंजन के नेतृत्व में कुशहा से कुर्सेला तक 40-45 प्रबुद्ध एवं जुझारू साथियों के साथ पद यात्रा की गई जिसका बिहार सरकार एवं आम बाढ़ पीड़ित जनता पर बहुत ही प्रभावकारी असर पड़ा।

अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश जस्टीस बालिया की अध्यक्षता में कुशहा त्रासदी के लिए जाँच आयोग का गठन किया गया था। जाँच आयोग का प्रतिवेदन सरकार को समर्पित भी किया गया। परन्तु आज तक सरकार ने उस बालिया आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित नहीं किया।

इस बिन्दु पर विनोद रंजन जी बहुत ही चिन्तित थे कि सरकार प्रशासन एवं नेता की लापरवाही से जनता की इतनी बड़ी क्षति हुई। उसका कोई न्यायिक निदान नहीं हुआ।

वे पुनः मुझसे मिलकर उक्त त्रासदी की क्षति के सवाल को उठाने के लिए दबाव डालने के प्रेरणा मुझे दी। परन्तु उनका असमय निधन हो गया जो हमलोगों के लिए अपूरणीय क्षति है। विनोद रंजन जी सही माने में सम्पूर्ण क्रान्ति एवं सर्वोदय के नेता के साथ पर्यावरण के एक संवेदनशील पर्यावरणविद् एवं जन प्रहरी थे। ■

एक सच्चे सर्वोदयी थे विनोद जी

- महेन्द्र यादव

सामाजिक मूल्यों का तेजी से क्षरण प्रत्येक क्षेत्रों में हुआ है इससे सामाजिक कार्य करने वाले भी नहीं बचे हैं। वैसे दौर में विनोद जी एक सच्चे सर्वोदयी के रूप में अपने आदर्श और कर्त्तव्य पथ पर चलते रहे। उनका असमय जाना पूरे सामाजिक क्षेत्र की बहुत बड़ी क्षति है। उसकी भरपाई नहीं हो सकती।

विनोद जी भारी भरकम शरीर के थे। बावजूद इसके किसी कार्य में मैंने आलस्य नहीं देखा। किसी कार्यक्रम की तैयारी हो या भगीदारी उसमें दिल से लग जाते थे। वे बिना थके लगातार उसे सम्पन्न कराकर ही लौटते थे। कार्य के दौरान मैंने उन्हें कभी भी थके हुए या उदास नहीं देखा। वे सदैव मुस्कुराते रहते थे। उनकी मुस्कुराहट यह प्रमाण थी कि वे सामाजिक कार्य को दिल से करते थे। विनोद जी मुझे भी सर्वोदय के बारे में अनेक बार बताते रहते थे। मुझे अनेक कार्यक्रमों में भागीदारी का आमंत्रण भी दिया था। वे बिहार स्टेट गाँधी निधि में एक दिन बैठाकर सर्वोदय पर काफी चर्चा करते हुए मुझे सर्वोदय मंडल में जुड़ने के लिए सदस्यता का आवेदन भी भरवाया था। उसके राष्ट्रीय सम्मलेन में जाने को भी लगातार प्रेरित करते थे। मैं कोशी क्षेत्र में कार्यों की व्यस्तता की वजह से नहीं जा सका जिसका अफ़सोस हमेशा रहेगा।

कोशी नव निर्माण मंच के अनेक कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी रहती थी। वे सदा साथियों को अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करते रहते थे। कोशी तटबंध के भीतर के किसानों के सर्वे मैंने की। रैयती जमीन में बदलाव और अन्य कोशी के सवालों को लेकर जब किसान मजदूर

महापंचायत सुपौल में आयोजित हुई तो उसमें बतौर अतिथि विनोद जी ने अपनी भगीदारी निभाई और आगे भी संघर्षों में भगीदारी की घोषणा की। उन प्रयासों ने रंग लाया और सरकार को विवश होकर कुछ प्रावधानों में संशोधन करना पड़ा। विनोद जी जन आन्दोलनों के राष्ट्रीय समन्वय के अनेक मीटिंग में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। उनको आन्दोलन के साथी काफी स्नेह करते थे आज भी उनके साथ बिताये गये क्षणों को याद करते हैं।

बिहार स्टेट गाँधी निधि के मंत्री के रूप में कार्य करते हुए उनके दफ्तर में उनसे अनेक बार मिला। जब भी पटना में होते थे, दफ्तर अवश्य आते थे। मैं वास्तव में कहूँ कि पूरी उम्र गाँधीवादी विचारों पर रचनात्मक कार्य करने वाले चन्देश्वर जी जैसे लोगों को उनके माध्यम से ही मिल पाया। संस्थानों के संचालन में उम्र खपाने वाले सच्चे लोग समाज की धरोहर हैं। उन्हीं लोगों से प्रेरित होकर मैं अनेक अवसरों पर जाया करता था। मेरा एक निजी मामला वहां से जुड़ गया था। मैं कोशी और अनेक मुद्दों पर सूचना अधिकार के तहत अनेक आवेदन लगाता रहता हूँ पर मेरा कोई स्थाई पता पटना में नहीं है इसलिए जगह-जगह पता बदलते रहना पड़ता है। किराये के घर वालों के पास जब अधिक चिट्ठियाँ आती हैं तो मकान मालिक उसे हटाने का इंतजाम करने लगते हैं और उससे प्रक्रिया और आवेदन बाधित होती है। दूसरा मेरे जैसे घुमक्कड़ आदमी चिट्ठियों को लेने के लिए उपलब्ध भी नहीं होता है तो वह चिट्ठियाँ लौट जाती हैं। अनेक मित्रों के दफ्तर के हाईकोर्ट के पते देने के बाद वहां के अनुभव भी निराश किए। जिसके बाद एक तरह से आवेदन देना बंद ही कर दिया था। उसकी चर्चा राजेन्द्र रवि जी से कर रहा था। वे कहे कि आप विनोद जी से जाकर मिलिए। मैं सोचने लगा कि कहीं विनोद

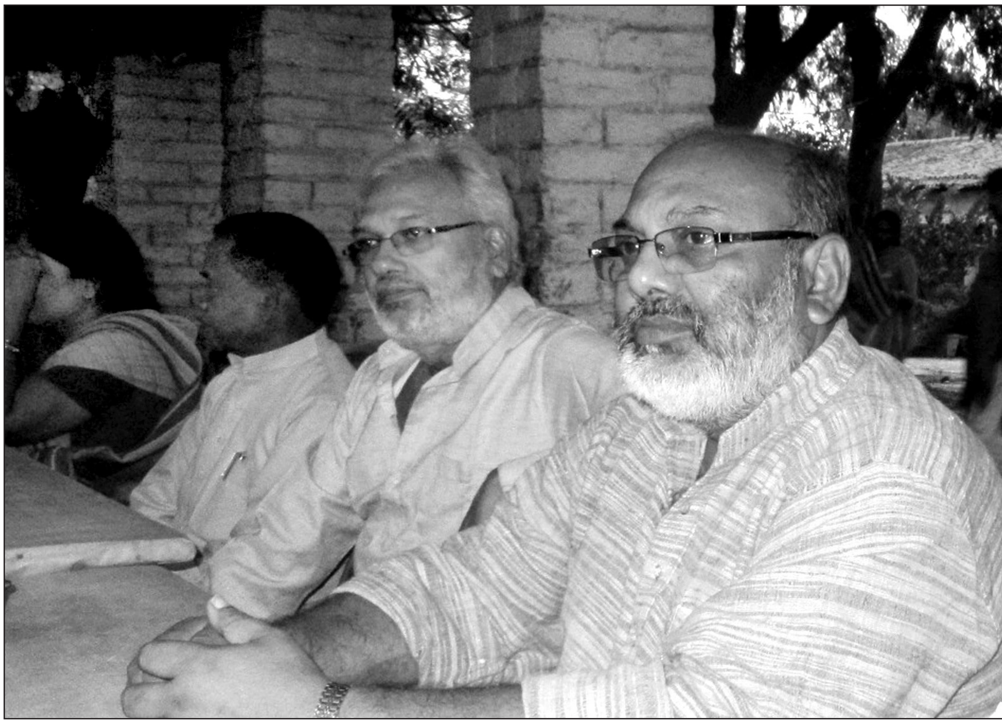

जी सोचेंगे कि गाँधी निधि में जुड़ने के लोभ में ये आदमी चिठ्ठियों का बहाना बनाकर आया है। इसलिए उन्हें जानते हुए भी यह बात हमने उनसे नहीं कही। राजेन्द्र रवि जी जब पुनः मुझसे एक बार पूछा तो मन की आशंका मैंने बता दी जिसके बाद उन्होंने उनसे बात की और मुझे उनके पास भेजे। विनोद जी मुझे बैठा कर समझाये कि ये संस्थाएं तो समाज के कार्य के लिए ही है। आप अपना निजी कोई कार्य करते नहीं है। यह तो समाज के लिए जरुरी सूचनाएँ मंगाते हैं। तो उसमें गाँधी निधि का सहयोग भी हो जायेगा। आप इसी पते पर सूचनाएँ मंगाइए। उनके इस आत्मीय बातचीत ने उन्हें और नजदीक ला दिया। एक दिन विनोद जी मुझे बुलाये और बताये कि पोस्टमैन कह रहा था वे यहाँ नहीं रहते तो मैं चिठ्ठियाँ नहीं दूंगा। मैंने उन्हें पुराना प्रकरण बताया जिसके बाद एक तकरीब निकाली गयी कि वे एक पत्र बनाकर दिए कि ये फिल्ड में कार्य के लिए बाहर रहते है और हमसे जुड़े हैं। मैंने भी एक आवेदन देकर लिखित दिया कि मेरी अनुपस्थिति में चन्देश्वर जी पत्र प्राप्त किया करेंगे। तब से मैं आज तक उसी पते पर पत्र मंगाता हूँ। अब जब भी मैं वहां जाता हूँ और विनोद जी की खाली कुर्सी देखता हूँ तो हर बार आँखे नम हो जाती हैं। अनेक बार चंद्रेश्वर जी उनकी कमी को बयाँ करते करते फफक उठते हैं। विनोद जी जब ब्रज किशोर मेमोरियल संस्थान के अध्यक्ष बने तो उस सक्रियता में मृतपर्याय बनी संस्थान में साँस फूंक दिए। लगातार सामाजिक गतिविधि के कार्यक्रमों की झड़ी लग गयी। पर इनके जैसे सक्रिय लोगों को भला कैसे जड़ता में जकड़े लोग बर्दाश्त कर सकते थे। वे इनके प्रगतिशील सोच और कार्यक्रम से डर कर आपसी साजिश के तहत उन्हें हटा दिए। हटाने के बाद मैं उनसे मिला था तो बता रहे थे कि बात हटने की नहीं है कैसे गलत और गबन करने वाले लोग सच्चे कार्य करने वाले लोगों को हटा देते है। इससे दुःख होता है। मुझे लगता कि इसकी कसक विनोद जी में अंतिम दिनों तक थी।

जब उनकी बीमारी की बात सुना तो विश्वास ही नहीं हुआ। मैं मित्र राहुल यादव जी के साथ भागे भागे साईं अस्पताल पहुंचा। वहां उनसे लम्बी बातचीत हुई। डाक्टरों के इधर-उधर घुमाने से बेहद तकलीफ में थे पर एक और तकलीफ उनके भीतर थी कि सामाजिक क्षेत्र में सुबह, शाम दिन रात समर्पित करने वाला व्यक्ति जब अंतिम में अस्पताल जाता है तो उनके घर के लोग ही बचाते हैं। सामाजिक क्षेत्र के यदा कदा ही हाल चाल लेने आते हैं। अनेक तो फेसबुक और फोन से ही हाल चाल ले लेते हैं। उन्होंने जेपी की बातों का उल्लेख करते हुए कहा कि जेपी कहते थे कि जब भी सामाजिक कार्यकर्ता बीमार पड़े तो उसके इलाज की पूरी जिम्मेवारी समाज और संगठनों को उठानी चाहिए। देखरेख उन्हीं को करना चाहिए। यह बात विनोद जी के साथ मेरी अंतिम बात थी। इसमें उनके जीवन के अंतिम समय की पीड़ा अभिवयक्त है। मैं मानता हूँ कि ये बातें हम सभी सामाजिक कार्य करने वाले लोगों के लिए आगे की चुनौती भी है कि इस दिशा में कार्य किए जाएँ जिससे इस तरह की सोच और दिक्कत किसी को अंतिम दिनों में नहीं आये।

उनका अंतिम संस्कार भी बिहार से इतना दूर हुआ कि अल्प सूचना पर वहां पहुँच पाना संभव नहीं था। जिसका बेहद अफ़सोस रहेगा। विनोद जी जैसे शानदार दमदार साथी को सादर नमन! कोशी नव निर्माण मंच और जन आन्दोलनों के राष्ट्रीय समन्वय के साथियों की तरफ से अंतिम सलाम! विनोद जी अमर रहें!! ■

गंगा की मुक्ति और जल श्रमिकों के पहरूए थे विनोद रंजन

- योगेन्द्र सहनी

जब गंगा मुक्ति आंदोलन चल रहा था तब मैं बहुत छोटी उम्र का था। यानी कि तब मैं मैट्रिक करके स्कूल से निकला था। एक दिन गांव समाज में बैठक हो रही थी जिसमें विनोद रंजन जी भी उपस्थित थे।

मैंने पूछा, भाई क्या हो रहा है ?

सब लोगों का कहना था कि पटना जाना है।

भाई किसलिए ?

मछुआरों के पूरे फ्री फिसिंग के सवाल पर।

हम बोले, जमींदारी तो टूट गई !

विनोद रंजन जी बोले, अब पूरे बिहार की नदियों को फ्री करवाना है।

मैं कहा, ठीक है, हमलोग भी चलेंगे।

1991 में मछुआरों का एक बड़ा जमघट पटना के गायघाट में हुआ था। मैं उस सभा में गया। वहां देखा, विनोद रंजन जी को कांख में थैला लिए घूम रहे थे। थैला में पर्चा था, पर्चा लोगों के बीच बांट रहे थे।

मैंने पूछा कि भाई जी– पर्चा कहां-कहां बाटे? उन्होंने कहा कि बिहार के करीब 10 जिलों में हम बांट कर आ रहे हैं।

यानी कि गंगा मुक्ति आंदोलन की तैयारी, जमघट की तैयारी 1990 में काफी जोर जोर से की गयी थी। गंगा मुक्ति आंदोलन के जमघट होने के बाद 1991 में बिहार सरकार के द्वारा नदियों में फ्री फिशिंग का अधिकार दिया गया। विनोद रंजन जी ने गंगा मुक्ति आंदोलन में जमींदारी प्रथा के खिलाफ से लेकर पूरे बिहार में चल रहे फ्री फिशिंग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

अब थोड़ा हम जल श्रमिक संघ संगठन में विनोद रंजन ने किस तरह भूमिका निभाई, इस पर भी चर्चा करते हैं। जल श्रमिक संघ का पटना में राज्य स्तरीय सम्मेलन विद्यापति भवन में करना था। हम लोगों ने चर्चा की कि यहां की भूमिका में सबसे अच्छा और व्यवस्थित ढंग से करने वाले विनोद रंजन जी जैसा कोई दूसरा नहीं हो सकते। इसलिए जल श्रमिक संघ का राज्य स्तरीय सम्मेलन पटना में दो बार किया गया जिसकी पूरी व्यवस्था उन्हीं के नेतृत्व हुई और सफल भी हुआ। जल श्रमिक संघ की विशाल रैली 2006 में मछुआरों के अधिकार सम्मान के लिए की गई जिसमें बिहार के 8 से 10 हजार मछुआरों ने हिस्सा लिया। यह रैली मुख्यतः बिहार सरकार की गलत जलकर नीति के खिलाफ थी। बिहार सरकार ने 2006 में एक ऐसी जलकर नीति लाई थी जिसमें "परंपरागत" शब्द हटा दिया गया था। इसका अर्थ यह हुआ जो मछुआरा परंपरागत रूप से सदियों से नदियों पर, तालाबों पर निर्भर रहा, परंपरागत शब्द हटाकर उसे बेदखल करना चाहती थी। इस रैली की तैयारी में विनोद जी ने जगह-जगह सभा, नुक्कड़ सभा की। विनोद जी ने भागलपुर, मुंगेर, सारण, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर आदि कई जिलों में दौरा करके रैली में आने को, लोगों-मछुआरों को उनके अधिकार दिलाने के लिए निमंत्रित किया था। और वह रैली पूरी सफल हुई और 2007 में बिहार सरकार के द्वारा एक नई जलकर नीति लाकर परंपरागत शब्द को जोड़ना पड़ा। यानी कि यह मछुआरों के इस आंदोलन की सबसे तीसरी बड़ी जीत थी। इसमें उनकी भूमिका अग्रणी रही। इस तरह के कार्यक्रम के साथ-साथ शिक्षा पर काम कर रहे बिहार लोक अधिकार मंच एवं जल श्रमिक संघ के तत्वाधान में 2009 में पटना से लेकर पश्चिम बंगाल तक 10 दिन की नौका यात्रा पटना से शुरू हुई। समस्तीपुर, मुंगेर, भागलपुर, कटिहार, साहिबगंज, झारखंड होते हुए पश्चिम बंगाल तक यह यात्रा चली। इस यात्रा में 10 दिन लगातार विनोद जी साथ रहे। यात्रा का मुख्य उद्देश्य था "फरक्का बराज से हो रहे नदियों से कटाव, विस्थापन एवं बांधों - बराजों के कारण गंगा तथा अन्य नदियों एवं अनेक सहायक नदियों में अच्छी किस्म के मछलियां नहीं आ पाना!" इन मुद्दों पर पुख्ता चर्चा समाज में हो और जन जागरूकता बढ़े। फरक्का बराज के कारण आज समस्या और विकराल होती जा रही है। हमलोग पहले से यह बात उठाते रहे थे कि बराज बनने से बाढ़-कटाव विस्थापन लगातार बढ़ रहे हैं, लोगों को क्षतिपूर्ति के लिए सरकारी सहारा पर निर्भर होना पड़ रहा है। यह बात विनोद जी एवं साथीगण पहले से कहते आ रहे थे समाज में। यानी कि जो समस्या आने वाली है वह समस्या समाज के बीच पहले से रखते रहे थे। आज भी वह समस्या बरकरार है और बढ़ रही है। यानी कि उनकी यह समझ आज भी प्रासंगिक है। उस सोच समझ को लेकर हमलोग आगे बढ़ने का काम करें, यह विनोद जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी! ■

कार्यकर्ता हो तो विनोद रंजन जैसा

- ललन

विनोद रंजन जी से पहली बार जब मिला, तब वे छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आम युवा की तरह एक नागरिक सपने पाले, प्रेम-सद्भाव, वाजिब श्रम का वाजिब मूल्य वाली आजीविका युक्त गार्हस्थ्य के सपने। कुछ नया नहीं लगा। खिलखिला कर मिलना हर किसी को पसंद है। थोड़ा छोटा कद लेकिन आकर्षित करता व्यक्तित्व – गोल चेहरे पर हल्की दाढ़ी और बरबस मुस्कान! बातों में कोई दार्शनिकता या तर्कपूर्ण विद्वता की झलक नहीं, न ही किए गए या हो रहे महत्वपूर्ण कार्यों की लफ्फाजी।

1982 से गंगा मुक्ति की लड़ाई में भागलपुर कहलगांव के कागजीटोला के गंगा पर जीने वाले परंपरागत मछुआ समुदाय का अस्तित्व जलकर जमींदारों के शोषण के विरुद्ध आवाज की मुखरता बढ़ाने में उत्प्रेरक की तरह लगा छात्र युवा संघर्ष वाहिनी का एक सदस्य विनोद रंजन इतना सामान्य सा? यह एहसास कुछ अजीब लगा था। तब हम 1990 में गंगा मुक्ति आंदोलन के महत्वपूर्ण विजय "जलकर जमींदारी की समाप्ति" के विजयघोष के साथ 1991 में पटना के गायघाट में आंदोलनकारी मछुआ, पत्रकार, छात्र युवा, रंगकर्मी, चित्रकार, लोक कलाकार और बिहार (झारखंड यानी दक्षिण बिहार सहित) भर के वरिष्ठ पर्यावरणविद, सामाजिक कार्यकर्ता स्त्री पुरुष जुटे थे, पूरी गंभीरता से – ताकि आंदोलन के अगले कदम की रूपरेखा बना सकें! विनोद रंजन उस जमघट में सक्रिय साथी के रूप में मिले। संघर्ष वाहिनी के कथित विचार बहस की प्रखरता या ओजस्वी भाषण देने, क्रांति गीत गाने वाले एक्टिविस्ट की जगह वे सरल, मृदुभाषी, मिलनसार युवक लगे।

गंगा मुक्ति आंदोलन के जमघट से यह संकल्प जारी हुआ था कि नदियों का स्वाभाविक हकदार मछुआ समाज है, जिसने सदियों से इसे संपूर्ण मानवता के लिए संजोकर रखा है – तो इसे जमींदारों सामंतों से निकाल कर सरकार के जरिए माफियों के हाथों बिल्कुल नहीं पड़ने दिया जा सकता। सरकार को आखिर माफिया, दलालों से राजस्व मिलता ही कितना है! सो बिहार के किसी नदी में, बहती धार पर किसी भी प्रकार का टैक्स नहीं दिया जाए। संकल्प की नूतनता और प्रखरता ने आंदोलन को पूरे बिहार में फैलने का अवसर दे दिया था। विनोद उसके जरूर महत्वपूर्ण हिस्सा बने। पर जमघट के बाद यदा कदा ही उनसे मिलना हुआ। आंदोलन में अनेक साथी अपनी अपनी स्थिति, अवसर, साधन के हिसाब से अलग अलग भूमिकाओं में लगे थे। पटना और आस पास के क्षेत्रों में, अखबार पत्रकार के बीच, पटना के राजनैतिक और बुद्धिजीवियों के बीच विनोद जी की ऊर्जा का उपयोग होता रहा। जल्दी ही तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद को समझ में आ गया कि बिहार के मछुआ समाज संगठित हो जाएं तो एक बड़े वोट बैंक साबित हो सकते हैं। उन्होंने आंदोलन का संदेश समझते हुए 1991 में ही संपूर्ण बिहार में गंगा सहित सभी नदियों की बहती धारा पर परंपरागत मछुआ को निःशुल्क शिकारमाही का अधिकार घोषित कर दिया। आंदोलन की इस सफलता में विनोद जी की भूमिका से शायद ही कोई इंकार करना चाहेगा। आंदोलन के अगुआ साथियों में अनेक महत्वपूर्ण नाम रहे हैं, उनकी भूमिकाओं को विस्तार से लिखा जाना चाहिए।

उनके एक्टिविज्म का प्रखर रूप तब दिखा जब बिहार लोक अधिकार मंच की प्रक्रिया 2003 में शुरू हुई। एकदम से उत्साह में आकर उन्होंने बिहार के सभी जिलों में सघन दौरा कर जेपी अनुयाई,

सर्वोदय, वाहिनी, आंबेडकरवादी मित्रों को जोड़ा। इस मंच में क्राई, कोलकाता भी एक घटक था। इससे बिहार लोक अधिकार मंच के जन सरोकार के संघर्ष की धार में कमी नहीं दिखी। दो वर्ष के अंदर ही मंच की धमक सभी जिलों में राजनीतिक और प्रशासनिक महकमों में दिखने लगी। मीडिया की सुर्खियों में भी मंच के दायरे में जनांदोलन की खबरें होतीं। झुग्गी झोपड़ी संघर्ष समिति, जल श्रमिक संघ, किसानों के मुद्दे, आवास अधिकार के मुद्दे सभी शिक्षा के अधिकार के व्यापक मुद्दे हैं – यह समझ बिहार के जनमानस में जगह बनाने में काफी हद तक सफल रही थी। कॉमन स्कूल सिस्टम पर धारदार बहस मंच ने छेड़ी थी, जिसका राजनीतिक दलों पर भी जबरदस्त असर था। लोकजनशक्ति पार्टी के रामविलास पासवान ने भी दलित एंगल पकड़ते हुए अपने दल में तात्कालिक एजेंडा बना लिया। तब के राज्यपाल सरदार बूटा सिंह ने भी इसे अपने भाषणों में जिक्र करना प्रारंभ कर दिया था। शिक्षक संघों, वामपंथी समूहों ने भी मंच के इस अभियान को सक्रिय समर्थन दिया था। बिहार लोक अधिकार मंच के नियमित जिला और राज्य सम्मेलनों में शिक्षा अधिकार, सुधार, पाठ्यक्रम की बहस के साथ आवास अधिकार, भूमिसुधार, जल श्रमिक, किसानी, छात्र युवा की हताशा और रोजगार के मुद्दे गूंजते रहते। इन सबमें विनोद जी की सक्रिय मौजूदगी को भूला नहीं जा सकता। राष्ट्रीय मंच नेफ्रे पर भी बिहार लोक अधिकार मंच छाया रहता।

इससे पहले थोड़े वक्त तक वे एक्शन एड के साथ भी काम करते रहे थे, कुछ अन्य संस्थाओं के साथ भी वे काम करते रहे। पर गांधी, लोहिया, जयप्रकाश,

कर्पूरी की धारा में ही उनकी सक्रियता ज्यादा रही। जे.पी.के निजी सचिव श्री सच्चिदानंद के बड़े प्रिय थे। विनोद झारखंड आंदोलन के साथियों के साथ भी उतनी ही शिद्दत से जुड़े थे। 2000 ईस्वी में झारखंड बनने के बाद उस नए राज्य में भी अनेक प्रक्रियाओं में शरीक रहते थे। जुड़ाव, संवाद, अभियान, क्रेज के प्रायः हर महत्वपूर्ण अवसरों पर विनोद जी की उपस्थिति होती ही थी। संयुक्त बिहार के कितने ही महत्वपूर्ण शख्सीयतों के साथ उनका आत्मीय और सक्रिय संबंध था, उसकी सूची शिद्दत के साथ कोई बनाने बैठे तो अंतहीन सी सूची बनेगी।

विनोद जी और पूनम जी ने जाति बंधन तोड़ते हुए विवाह किया था और कई कठिनाइयां झेलते और पारिवारिक दायित्वों को सम्हालते हुए भी सामाजिक कामों से ही जुड़े रहे। कोई निजी संपत्ति नहीं बनाई। एक मात्र संतान को पढ़ाने में उन्हें काफी कठिनाई हुई। पर कभी वे किसी अन्य व्यवसाय में नहीं लगे। समय के साथ विनोद जी अनेक सामाजिक प्रक्रिया के हिस्सा बने। सर्वोदय आंदोलन, गांधी जेपी के अनुयाई समूह ही नहीं वामपंथी और आंबेडकरवादी समूहों में भी उनकी मौजूदगी दिखती थी। उनकी सहजता और मिलनसार व्यक्तित्व के सभी कायल थे। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ भी वे सहज उठते बैठते रहे, पर किसी दल में जाने के इच्छुक नहीं रहे। सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों के लोगों की अनेक व्यक्तिगत मनोहर कहानियां वे बड़े मजे लेकर सुनाते। उनमें अतिशयोक्ति भी होती होगी पर बहुधा सही होते, मनोरंजन से भरपूर भी। विनोद जी में नाम अनुरूप "रंजन व विनोद" भरपूर था। फुर्सत के पलों में वे थोड़ा अलग जाकर सिगरेट की कश लगा आते। किसी ने उन्हें शायद ही मुंह लटकाए उदास या तनाव में देखा होगा।

अंतिम समय में अस्पताल में जीवन संघर्ष करते वक्त भी उनकी विनोदप्रियता बनी रही। कोई समझ नहीं पा रहा था कि वे अंतिम यात्रा के करीब जाते वक्त भी बहुत परेशान नहीं थे। बताते हैं कि चेहरे पर मुर्दनी छाई हो, ऐसा बहुत नहीं था। आज जब वर्ष बीतने को है विनोद रंजन कहीं दूर मुस्कुराते, खिलखिलाते झांकते दीखते हैं। मानो जीवन में और बाद में भी लोक अधिकार का संघर्ष जारी रखे हुए हैं। ■

विनोद रंजन : अभाव में भी मुस्कुराता एक संगठनकर्ता

- उदय

विनोद रंजन की मृत्यु को एक साल होने को है। 10 दिसंबर 2023 को उनकी मृत्यु इलाज के क्रम में दिल्ली में हुई पर लगता नहीं है कि उनके गुजरे इतने दिन हो गए हैं। ऐसा लगता है ये तो हाल फिलहाल की घटना है। ऐसा इसलिए भी लगता है कि वे अचानक चले गए। हम साथियों के बीच विनोद रंजन अपेक्षाकृत ज्यादा स्वस्थ थे। उन्हें हृदय, किडनी, डायबिटीज, बल्ड प्रेशर, थायरॉयड, यूरिक एसिड जैसी कोई गंभीर बीमारी नहीं थी जिसके लिए नियमित दवा लेनी पड़ती है। वे ऐसी बीमारी के शिकार हुए जिसके बारे में डॉक्टर ने भी कन्फर्म कुछ नहीं कहा। हां सेप्टीसीमिया की ओर इशारा जरूर किया। मैंने पहली बार जैसा उनका डीलडोल देखा था अंत तक भी वही रहा। साल तो याद नहीं है लेकिन इतना याद है कि पटना सीटी में संघर्ष वाहिनी के कार्यक्रम में उनसे संभवतः पहली मुलाकात हुई थी। पटना सीटी में ही दो तीन कार्यक्रमों में साथ साथ रहने का मौका मिला था। फिर तो गंगा मुक्ति आंदोलन में मिलने जुलने और काम करने का सिलसिला तेज हो गया। लेकिन 2000 ई. में जब बिहार लोक अधिकार मंच और नेफ्रे की प्रक्रिया चली तब हम लोगों की घनिष्ठता काफी बढ़ गई। बिहार लोक अधिकार मंच की शुरुआत भागलपुर से हुई थी फिर यह संगठन बिहार के 18 जिलों में खड़ा हो गया। इस संगठन को खड़ा करने में कई साथियों का योगदान रहा है। लेकिन विनोद रंजन का महत्वपूर्ण योगदान था। विनोद रंजन के संगठन क्षमता की चर्चा साथियों में कम होती है, अधिकतर साथी उन्हें व्यवस्थापकीय के रूप में ही ज्यादा याद करते थे। जगह खोजने से लेकर खाने रहने का जिम्मा विनोद जी पर सौंपकर साथी निश्चित हो जाते थे। इसी कारण उनका व्यवस्थापकीय कौशल से ही लोग ज्यादा परिचित हुए। विनोद रंजन से मेरी आत्मीयता बढ़ाने में बिहार लोक अधिकार मंच के कार्यालय और बाद में संवाद कार्यालय की बड़ी भूमिका थी। बिहार लोक अधिकार मंच का कार्यालय कदम कुंआ, नाला रोड – अरविंद महिला कॉलेज के निकट, नेहरू नगर, पाटलिपुत्रा और अंत में पुनाईचक में लिया गया था। इसी बीच संवाद का भी कार्यालय कृष्णा नगर में लिया गया। ये कार्यालय साथियों का एक ठौर ठिकाना बन गया था। राजधानी में एक ठिकाना बन जाने से साथियों से मिलने जुलने और बतियाने की नियमितता बढ़ गई। इस कार्यालय के केंद्र में विनोद जी हमेशा बने रहे। इस बीच साथी राजीव रंजन भी कार्यालय में स्थापित हो गए। राजीव एक वामपंथी से आए साथी थे जो नियमित संगति से आत्मीय हो गए। हम ढूंढ ढूंढ कर मिलने और साथ रहने का मौका निकाल ही लेते थे। जब भी मैं पटना पहुंचता तो विनोद जी को याद कर लेता और वे हाजिर हो जाते। घनश्याम जी भी जब कभी पटना पहुंचते तो विनोद रंजन तो साथ होते ही होते और कोई बहाना (मौका) बनाकर मुझे भी शामिल कर लिया जाता। फिर अड्डेबाजी गप्प शुरू और नए नए आइडिया पर बात चलती रहती। ऐसे नाहक मिलन से कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी तय हो जाते थे। विनोद रंजन के थैले में एक लूंगी और गमछा हमेशा मौजूद रहता था। वे जब घर से निकलते थे तो यह कहकर नहीं निकलते थे कि लौटना कब है। साथियों ने कह दिया कि यहीं रुक जाइए तो रुक गए, या कहीं चलना है तो बाहर बाहर ही चल दिए। इसी वक्त उनका लूंगी और गमछा काम आ जाता। जब वे बीमार थे और महावीर कैंसर संस्थान में भर्ती थे तो मैं वहां मिलने गया था। बातचीत के क्रम में उन्होंने पूनम जी से कहा कि बीमार नहीं रहते तो हम आपको टेर देने वाले थे। अभी हम फरार रहते। विनोद रंजन घुमंतु एक्टिविस्ट थे। घर में वे रहते ही नहीं थे। पटना में रहते हुए भी जब वे हम साथियों के साथ रहते घर नहीं जाते थे। साथियों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताना उन्हें अच्छा लगता था। बिहार लोक अधिकार मंच का पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर के सम्मेलनों

में उनकी अहम भूमिका थी। इन कार्यक्रमों में मुख्य और विशिष्ट अतिथियों को लाने ले जाने की जिम्मेदारी उनकी ही थी। हमलोगों ने पटना में झुग्गी झोपड़ी और जल श्रमिकों के दो तीन बड़े कार्यक्रम किए। लगभग सात आठ हजार जल श्रमिकों की पटना में रैली हुई। विद्यापति भवन में सम्मेलन हुआ तथा पटना से फरक्का तक नाव यात्रा हुई सभी में विनोद रंजन की महत्वपूर्ण भूमिका थी। हमलोगों ने दो बार बिहार में यात्रा निकाली एक लोक अधिकार यात्रा और दूसरा शिक्षा अधिकार यात्रा – दोनों यात्रा लगभग 24 जिलों से गुजरी। इन यात्राओं में भी विनोद रंजन की उल्लेखनीय भूमिका थी।

मेरा एक साथ रुकने, खाने और कार्यक्रम करने का सिलसिला लगभग दस वर्षों तक नियमित और तेज चला जिस कारण हमारी आत्मीयता भी घनी हो गई। हमारी आत्मीयता इतनी बढ़ गई थी कि कुछ दिन बीत जाने पर मिलने और साथ रहने का बहाना ढूंढ लेते थे। छोटे मोटे कार्यक्रम और काम के लिए वे कहते पटना आ जाइये तो मैं आ जाता और मैं कहता भागलपुर आ जाइये तो वे आ जाते। फिर साथियों सहित मजा करते। इसी खुशनुमा माहौल में काम भी कर लेते। इसी क्रम में संवाद के सहयोग से स्वशासन अभियान के लिए झारखंड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार, बंगाल में प्रक्रिया चली। जिसमें नियमित रूप से बाहर जाना और मिलना हुआ करता था। अपने शहर से यातायात का बेहतर विकल्प रहने के बावजूद जब भी कहीं जाना होता था तो हमलोग साथ में ही टिकट लेते थे। विनोद की पसंद नापसंद उनके व्यवहार और आदतें उन्हें दूसरे से भिन्न पहचान देती है। भयानक ठंड में भी वे गर्म पानी से कभी स्नान नहीं करते थे। बहुत दिनों तक वे पैंट में बेल्ट की जगह डोरी बांधते थे, बाद में पिता जी ने बेल्ट खरीद दिया तो उन्हें बेल्ट पहनना पड़ा। वे मटन के इतने शौकीन थे कि कोई अगर कह दे कि आज रुक जाइए मटन बनाते हैं तो वे यात्रा स्थगित कर देते थे। चिकन, मछली और अंडा को वे नानभेज की श्रेणी में वे मानते ही नहीं थे बोलते थे मजबूरी में खा लेते हैं। पनीर की सब्जी तो वे खाते ही नहीं थे, कहते थे पनीर की कहीं सब्जी खाई जाती है। मसूर दाल में अरबी (कच्चू) डालकर बनाई गई रेसिपी उन्हें बहुत पसंद थी। जब भी वे यात्रा पर जाते तो सत्तू पराठा और आचार उनका प्रिय खाना होता।

कार्यक्रमों की तैयारी में लगे रहते थे लेकिन मंच पर बोलने के लिए कभी प्रयासरत नहीं रहते जैसे आजकल किसी साथी को अगर बोलने का मौका नहीं मिला, अखबार में नाम नहीं आया तो तुरंत मुंह फुला लिया जाता है।

विनोद रंजन असाधारण थे। वे बिहार झारखंड के चुनिंदे कार्यकर्ताओं में से एक थे। वे न केवल संघर्ष वाहिनी, सम्पूर्ण क्रांति, राष्ट्र सेवादल और गांधीवादी सर्वोदयी जमात के महत्वपूर्ण साथी थे बल्कि दूसरी धारा में भी उतने ही लोकप्रिय थे। बिहार में उनसे ज्यादा दूसरे राज्यों के साथियों का संपर्क पता किसी के पास नहीं था।

एक व्यक्ति जिसने छात्र जीवन से सामाजिक कार्य की शुरुआत की और ताउम्र एक्टिविस्ट बने रहे। मामूली बात नहीं है। अभाव में जीते हुए भी कभी डिगे नहीं और न तो आत्मसम्मान से समझौता किया। यह रेखांकित करने लायक है। आज जब आंदोलनों का दौर खत्म हो रहा है, कैडर बनने का सिलसिला घट रहा है ऐसे में विनोद रंजन जैसे साथियों को याद करना, भूलने न देना जरूरी है। विनोद रंजन नई पीढ़ी के लिए एक सीख हैं। ■

विनोद रंजन: एक साधारण परिवार का असाधारण नेतृत्वकर्ता

- गौतम कुमार

सामाजिक कार्यकर्ता होना दुनिया की सबसे कठिन साधनाओं में से एक है। यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। सामाजिक कार्यकर्ता यानी खुद के जीवन के साथ साथ पारिवारिक रिश्ते नाते की आहुति। यह मेरे जीवन का सबसे दुखद दौर है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि मेरा सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों साथ साथ चल रहा है। विनोद रंजन, रणजीव, डॉ. प्रेम प्रभाकर, डॉ. आशुतोष आदि ऐसे नाम हैं, जिनके सानिध्य में मैंने सामाजिक जीवन का ककहरा सीखने की शुरुआत की थी। इन सभी से अभी और भी बहुत कुछ सीखना था। इनके कंधों पर बैठकर समाज को संवारने के कई सपने देखने थे। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे ऐसे मार्गदर्शक साथी सशरीर आज हमारे बीच नहीं हैं। ऊंची नीची, ऊबड़ - खाबड़ पगडंडियों पर अपने पैरों के निशान छोड़कर वे सभी दुनिया से चले गए। सच तो ये है कि जब तक इनके निशान हमारी स्मृतियों की जमीन पर रहेंगे तब तक हमें अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति नहीं मिल सकती। हमारे इन वरिष्ठ साथियों की स्मृतियां हमें हमेशा अपने फर्ज बोध का

अहसास कराती रहेंगी और घनघोर निराशा के क्षण में भी हमें रौशन करती रहेंगी।

इन्हीं में से एक शख्सियत, जिनका नाम विनोद रंजन था, उनकी कुछ यादों को समेटने की यहां छोटी सी कोशिश कर रहा हूँ।

उनके ये शब्द "देखो तुम अब मुझे परेशान मत करो, मुझे गुस्सा नहीं दिलाओ। मेरी तबियत खराब है और मेरी पत्नी फोन लगाकर दी है। सर्व सेवा संघ की बैठक के लिए तुम्हारे टिकट का इंतजाम बहुत कठनाई से कर पाया हूँ, इसका अंदाजा तुम्हें नहीं है। तुम हर हाल में वर्धा की बैठक में जाओगे। अरे यार गौतम तुम हम सबकी उम्मीद हो। हम सब के बाद इस जिम्मेदारी को तुम्हें ही उठाना होगा।" दिवंगत साथी विनोद रंजन जी की फोन पर कही गई उक्त बातें आज भी मेरे कानों में गूंजती हैं और मैं बेचैन हो उठता हूं। जहाँ तक मेरा उनके साथ का अनुभव रहा, वे कभी भी किसी पर गुस्सा नहीं करते। सभी से हंसकर बात करना उनकी आदतों में शुमार था। मेरे प्रति उनका यह प्रेम और विश्वास आज भी पीछा कर रहा है।

इतना कहने के बाद भी मैंने दिवंगत साथी विनोद रंजन जी की वह बात नहीं मानी और निजी परेशानी में उलझे होने के चलते उस समय वर्धा नहीं जा पाया था। इसका आज भी मुझे बेहद अफसोस है।

विनोद जी एक अभिभावक की तरह 2 या 3 दिनों के शिविरों, बैठकों, कार्यक्रमों में अपने साथ जाने वाले साथियों का बहुत ख्याल रखा करते थे। मैं उनके साथ जब सर्व सेवा संघ वाराणस ध्वस्तीकरण के पूर्व शिविर में गया था, तो उनके रुकने के लिए अलग रूम की व्यवस्था थी। बावजूद इसके विनोद जी हमलोगों के साथ हॉल में रुके, हॉल की साफ सफाई से लेकर खाना-पीना तक साथ रहे। कहने का मतलब यह है कि विनोद रंजन जी एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में असाधारण नेतृत्वकर्ता थे।

दिवंगत साथी विनोद रंजन देशभर के लगभग सभी आंदोलनों से जुड़े हुए थे। वह बिहार के इकलौते शख्सियत थे जिनका बिहार के हर जिले के कार्यकर्ताओं व नेताओं से जीवंत सम्पर्क था। जिस किसी को किसी सामाजिक कार्यकर्ता और नेताओं का मोबाइल नंबर, पता जरूरत पड़ती उन्हें विनोद रंजन से संपर्क से मिल जाता था। एक और बात थी विनोद रंजन जी में यदि आपको बिहार में कोई कार्यक्रम करना हो या किसी संगठन का निर्माण करना या फिर उस संगठन से लोगों को जोड़ने जैसे काम को आसानी से कर देते थे।

देश के किसी कोने में समाज परिवर्तन की लड़ाइयों में वो अग्रिम पंक्ति में खड़े होते थे। 1982 में जब गंगा मुक्ति आंदोलन संगठन बनने से पहले वे अनिल प्रकाश जी के साथ कहलगांव के कागजी टोला आये थे। उस समय गंगा में पानीदारी प्रथा थी। ठेकेदारों का मछुआ पर अत्याचार चरम पर था। ठेकेदारों का आतंक इस कदर था कि मछुआ अपने परिवार के लोगों की अस्मिता और इज्जत बचाने की हिम्मत तक नहीं जुटा पाते थे। इन विपरीत परिस्थितियों में इन लोगों ने गंगा मुक्ति आंदोलन जैसे संगठन को वहाँ खड़ा किया और गंगा से पानीदारी प्रथा को समाप्त कर पूरे बिहार में फ्री फिसिंग का अधिकार मछुआरों को दिलाया। गंगा मुक्ति आंदोलन के दौरान तय किया गया कि गंगा से पानीदारी प्रथा को खत्म करने के लिए राज्य सरकार पर दबाव बनाने के लिए नौका जुलूस कहलगांव से पटना तक निकाला जाए। नौका जुलूस की तैयारी के लिए पटना और उसके आसपास के जिले के गंगा तट के मछुआरों के बीच काफी मेहनत की जरूरत थी।

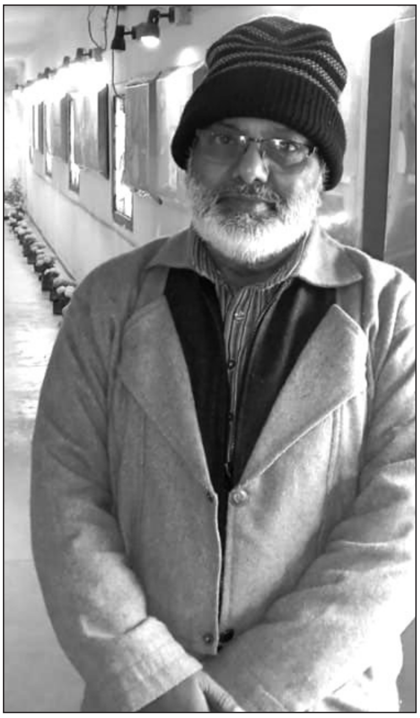

14 और 15 अक्टूबर 2024 को पटना के युथ होस्टल में जब गंगा मुक्ति आंदोलन का मित्र मिलन और नवम्बर में 28, 29 और 30 को गंगा बेसिन पर प्रस्तावित राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारी बैठक थी। उस बैठक में विनोद रंजन जी की कमी बहुत खली। कहाँ ठहरें, कहाँ खाना खाएं, मीटिंग की व्यवस्था आदि को लेकर ऐसा लग रहा था कि पटना में हम सब अनाथ बच्चों की भांति सड़कों पर भटक रहे हैं। अंततः भटक-भटक कर बैठक की सारी व्यवस्था उदय जी, इकराम हुसैन और हमने की। विनोद जी होते तो पटना की बैठक की सारी व्यवस्था को लेकर हमलोग निश्चिंत रहते और वे भागदौड़ कर सबकुछ कर देते और उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं होती।

सच पूछिए तो दिवंगत साथी विनोद रंजन जी सहयोग और सहभागिता की मिसाल थे। उनसे मैंने सामाजिक जीवन की ढेर सारी बातें सीखी। उनकी सहजता और सौम्यता की बहुत याद आती है। आपकी यादें हमारी स्मृतियों में हमेशा बनी रहेगी और प्रेरित करती रहेगी। ■

विनोद रंजन : क्या भूलूं, क्या याद करूँ?

- डॉ उमेश मुरौल

विनोद रंजन छात्र युवा संघर्ष वाहिनी से जब जुड़े, तब से हम सभी साथी को विनोद रंजन के साथ रहे। संघर्ष वाहिनी के जो भी कार्यक्रम हुए उसमें वे सक्रियता के साथ लग जाते थे। कोई भी आन्दोलन हो जैसे- बोधगया भूमि संघर्ष, प्रेस बिल, गंगा मुक्ति आंदोलन, किसानों का आंदोलन, दलित पिछड़े के अधिकार और संघर्ष हो सभी में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। वाहिनी से तीस वर्ष पूरा होने के बाद विभिन्न सामाजिक संगठनों में सक्रिय रहे। बिहार में बच्चों के अधिकार के लिए बिहार लोक अधिकार मंच निर्माण में योगदान किया। इसके माध्यम से जागरुकता अभियान चलाया गया। यह अभियान दस वर्षों तक चलता रहा, इसमें भी उनकी सक्रिय भूमिका रही थी। जल, जंगल और जमीन को बचाने के लिए पदयात्रा का शुभारंभ जुड़ाव और बाढ़ सुखाड़ आन्दोलन के तहत हुआ। इस आंदोलन में विनोद रंजन जी सक्रिय सहभागिता रही है। वाहिनी मित्र मिलन, स्वाशासन अभियान में भी विनोद रंजन की अहम भूमिका रही। अपने जीवन काल में पूरी तरह समाज और संगठनों और साथियों के साथ बिना स्वार्थ के सहयोग करते रहे। गांधी स्मारक निधि, ब्रजकिशोर मेमोरियल ट्रस्ट, बिहार सर्वोदय मंडल संगठनों से जुड़कर संगठनों का विकास और साथियों को जोड़ने का प्रयास लगातार करते रहे। बिहार में जो भी घटना होती थी, किसानों, महिला, मजदूरों, और दलितों पर अत्याचार हो सभी संघर्षों में सक्रिय सहभागिता रही। विनोद रंजन जी जिस सिद्धांतों को लेकर संघर्ष वाहिनी से जुड़े उससे अपने जीवन काल में उन्होंने

अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया और समता मूलक समाज की स्थापना के लिए अपने जीवन को समाज और देश के लिए समर्पित कर दिया। अपना जीवन साथी अन्तर्जातीय चुन कर यह साबित किया कि हम जातिवादी नहीं हैं तथा इस तरह जो भी साथी शादी करने की घोषणा करते उसको सहयोग किया करते थे। विनोद रंजन जी की कुछ अलग आदते थीं – जैसे जो दवा खानी है उसे दिन भर का खुराक एक ही बार खा लेते थे। इस बात की जानकारी जब मुझे हुई तो हमने मना किया ऐसा करना ठीक नहीं है स्वास्थ्य के लिए! उन्हें मछली और मटन बहुत ही पसंद था। बहुत ही रुचि के साथ भोजन करते थे। विनोद रंजन जी से अंतिम भेंट हमलोगों की बनारस में सर्व सेवा संघ के धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम में हुई थी। उसके बाद मोबाईल से ही बराबर बातचीत होती रही है। बीमार होने पर भी मोबाइल से बात होती रही और सुधार भी हुआ। लेकिन जब फिर से तबियत खराब हुई तो पूनम जी दिल्ली लेकर चली गई और फिर सदा के लिए हमलोगों से बिछड़ गये।

पटना अब सूना लग रहा है। किसी भी प्रकार की जानकारी हो। किसी का मोबाईल नंबर लेना हो। उस काम के लिए विनोद रंजन ही थे। किसी को कोई सहयोग करना हो, इलाज कराना हो, उनके लिए पैसा की व्यवस्था करनी हो, किसी की बेटी की शादी में पैसा की जरूरत है विनोद रंजन सहयोग करने को हमेशा तत्पर रहते थे। किसी साथी को पटना में रुकना हो तो अपने घर या गांधी निधि में व्यवस्था कर साथियों को सहयोग करते रहे। आज पटना में कोई ऐसा साथी नहीं है कि साथियों को सहयोग कर सके। अब मुझे पटना जाना अच्छा नहीं लगता है। मुझे पटना गये हुए एक वर्ष से अधिक हो चुका है। मुझे रहने की कोई दिक्कत नहीं हैं लेकिन जो साथी संघर्ष में साथ रहे हैं और पटना में रहने का कोई इंतजाम नहीं रहने पर भी कोई चिंता का विषय नहीं था। विनोद रंजन साथियों के लिए व्यवस्था करने से कभी हिचकिचाते भी नहीं थे। साथियों से सहयोग और जुड़ाव बना रहता था। असमय में विनोद हमलोगों को सदा के लिए छोड़ गया। यह समाज और साथियों के लिए अपूरणीय क्षति है। राष्ट्र सेवा दल, शिक्षा के अधिकार, सूचना के अधिकार, काम के मौलिक अधिकार जैसे ज्वलंत मुद्दों को उठाने में तत्पर रहते थे। विनोद रंजन जी का साथियों से मतभेद

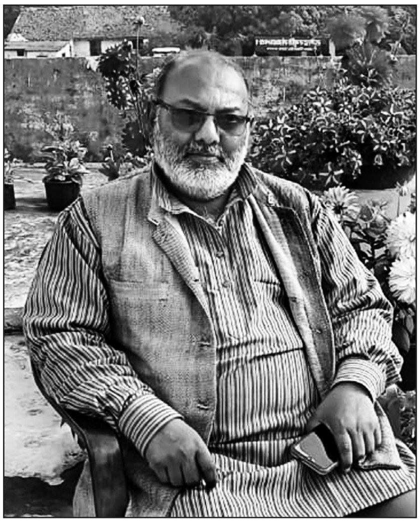

रहने पर भी वे बुरा नहीं मानते थे। सभी प्रकार के विचार धाराओं के साथी से उनका व्यक्तिगत संबंध रहता था। सभी साथियों से मिल जुल कर रहना बहुत अच्छा विचार था। सामाजिक और संगठनों के कामों को पहली प्राथमिकता थी। पटना में रहते हुए भी वे घर नहीं जाते थे। पारिवारिक तनाव या साथियों के साथ मतभेद को भी चुपचाप अपने अन्दर समाहित कर दूसरे किसी भी साथी या मित्र और परिवार को अनुभव नहीं होने देना बहुत बड़ी खूबी थी। लाख परेशानी के बाद भी चेहरा पर कोई तनाव नहीं होता था। विनोद रंजन कोरोना काल में भी घूमते रहे लेकिन एक भी कोरोना का वैक्सीन नहीं लिया। मैंने कहा कि हमलोग वैक्सीन ले चुके हैं, तुम भी लेलो, लेकिन नहीं लिया। और बोला देखते हैं– नहीं लेने से क्या होता है? यादें तो बहुत सारी हैं लेकिन अब केवल यादें ही साथ में है। पूनम जी से आग्रह करता हूं साथियों से सम्पर्क रखें। विनोद नहीं है तो क्या हुआ? हमलोग एक परिवार की तरह हैं। विनोद जी अपने पीछे इस परिवार के सदस्यों को छोड़कर अल विदा कह कर चल दिए। इस दुःख की घड़ी में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं पूरे परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ■

बिहार एवं झारखंड के बीच एक सेतु थे विनोद जी

- रमण कुमार

संपूर्ण क्रांति धारा के मेरे अनुज साथी विनोद रंजन लगता नहीं कि वे हमलोगों को छोड़ हमेशा के लिए चले गए हैं। वे भले हमलोगों के बीच सदेह नहीं हैं पर अपने कृतित्व व अपनापन व्यवहार के कारण हमेशा हम सभी के दिलो-दिमाग में कायम रहेंगे।

अभी ऐसा लगता है कि विनोद जी का फोन आ गया हो। वे बराबर फोन करके हाल समाचार ले लिया करते थे। जब कभी कार्यवश मुज्जफरपुर आना होता तो बिना मिले पटना वापस नहीं होते। अगर रुकना होता तो अपने यहां रुकना हो जाया करता था। वे मुझे हमेशा दादा (बड़े भाई) कहकर ही सम्बोधन करते थे।

अपने साथियों से उनका जीवंत संपर्क था। शायद ही कोई साथी हो जिनका फोन न उनके पास नहीं हो। यों समझे कि सभी साथियों का फोन डायरेक्ट्री उनके पास था। सभी साथियों का हाल समाचार लेते रहना उनकी एक विशेष आदत तो थी ही साथ ही सबके सुख-दुख में हमेशा उनकी भागीदारी भी होती रहती थी। विनोद जी की अंतरजातीय शादी हुई वह भी क्रांतिकारी ढंग से। उनकी अर्धांगिनी पूनम जी एक सामाजिक कार्यकर्ता के जीवन संगिनी होने के कारण हर परिस्थिति में उनका साथ देती रहीं। इनके सहकार के कारण ही विनोद जी सामाजिक कार्य में बराबर सक्रिय रह सके।

विनोद जी बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष, बिहार स्टेट गांधी स्मारक निधि के मंत्री, सीएफडी बिहार लोक सेवा

अधिकार मंच के संगठक, झारखंड के जुड़ाव एवं संवाद से जुड़े रहने के साथ-साथ संघर्ष वाहिनी के अलावा संपूर्ण क्रांति धारा से जुड़े कई व्यक्तियों, संगठनों, संस्थाओं से इनका सीधा जुड़ाव था। वे घनश्यामजी, मधुपुर, झारखंड के माध्यम से जुड़ाव, बाद में संवाद से जुड़कर बिहार एवं झारखंड के बीच सेतु का काम करते रहे। सभी सार्वजनिक आयोजनों में उनकी प्रमुख भागीदारी रहती थी। इस धारा से जुड़े बिहार स्तर के सभी आयोजनों की व्यवस्था के साथ साथ प्रमुख भागीदारी रही है।

विनोद जी के बारे में क्या-क्या कहूं, क्या लिखूं शब्दों में व्यक्त करना बड़ा ही कठिन व दुरुह कार्य है। वैसे भी मुझे लिखने का अभ्यास नहीं है, अनाड़ी हूं। मन में तरह-तरह के अनुभवों, यादों के साथ प्रिय साथी विनोद को अश्रुपूरित भाव से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ■

कार्यकर्ताओं की कलम से

विनोद रंजन: एक समर्पित समाजसेवी और गांधीवादी विचारधारा के अनुयायी

- गुलाब चन्द्र

विनोद रंजन जी का जीवन और कार्य हमें सच्चे समाजसेवा की प्रेरणा देते हैं। वे जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में शुरू हुए सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन के प्रेरित कार्यकर्ताओं में से एक थे, जिन्होंने बिहार और झारखंड के जन मुद्दों पर अपनी समझ और संवेदनशीलता से अमूल्य योगदान दिया। उनसे पहली मुलाकात जुड़ाव संस्था द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में हुई थी। इस कार्यक्रम में उनकी विनम्रता और सामाजिक कार्यों के प्रति उनका समर्पण स्पष्ट रूप से झलकता था। वे गांधी विचारधारा और समाजवादी विचारधारा से गहराई से प्रभावित थे और यह उनकी असाधारण जीवनशैली, समाज के प्रति उनकी सेवा भावना और सबसे अहम – मानवता के प्रति उनके समर्पण में स्पष्ट दिखता था।

प्रारंभिक जीवन और सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन में योगदान

विनोद रंजन जी का जीवन हमेशा संघर्षों और समाज की सेवा के लिए समर्पित रहा। जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन से वे गहरे रूप से जुड़े थे। यह आंदोलन उन्हें समाज की वास्तविक समस्याओं और लोगों की दुर्दशा को समझने का अवसर दिया। वे कहा करते थे कि जाति बंधन को तोड़ने के लिए जाति टाइटल को हटाना आवश्यक था, जो जेपी आंदोलन में हुआ था। जिससे समाज में समानता और बंधुत्व को बढ़ावा मिल सके।

जाति बंधन मुक्त उनकी इस सोच ने प्रेरित किया कि समाज में हर किसी को समान रूप से अपनाया जाए और जात-पात के भेदभाव को समाप्त किया जाए।

बिहार और झारखंड के जन मुद्दों की समझ

विनोद रंजन जी की समाज की समस्याओं पर एक गहरी दृष्टि थी। बिहार और झारखंड की परिस्थितियों को वे बखूबी समझते थे और इन क्षेत्रों के विकास और जन समस्याओं पर उनकी सूक्ष्म समझ ने उन्हें इस क्षेत्र के लिए अनमोल बना दिया। जुड़ाव संस्था से जुड़े रहकर उन्होंने बाढ़ और सुखाड़ मुक्ति अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे बिहार के पटना गांधी स्मारक निधि के मंत्री भी रहे और वहां उन्होंने जन-कल्याण के कार्यों को आगे बढ़ाया। उनका मानना था कि समाज के अंतिम व्यक्ति को नेतृत्व में आगे लाना ही सच्ची समाजसेवा है।

झारखंड बिहार और बाढ़ सुखाड़ मुक्ति अभियान

विनोद जी का झारखंड से विशेष लगाव था। यहां की समस्याओं और विकास की संभावनाओं पर वे हमेशा चिंतन करते थे। बाढ़-सुखाड़ मुक्ति अभियान को बिहार में सफलतापूर्वक संचालित करने में उनकी अहम भूमिका रही। उन्होंने समुदायों को इस दिशा में संगठित किया, जिससे लोगों में आपदा प्रबंधन की समझ बढ़ी और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की तैयारियों में सुधार हुआ। इस अभियान ने न सिर्फ लोगों को राहत पहुंचाई, बल्कि उनके लिए सतत् विकास के रास्ते भी खोले।

संवाद झारखंड के साथ कार्य

बाद के दिनों में विनोद रंजन जी संवाद संस्था, झारखंड से जुड़े और अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने बिहार में सामाजिक कार्य जारी रखा। उनकी यह

निष्ठा और परिश्रम का ही परिणाम था कि उन्होंने समाज के अंतिम व्यक्ति के नेतृत्व को महत्व दिया और हर किसी को समाज के उत्थान के लिए प्रेरित किया। उनके द्वारा किया गया कार्य एक स्थायी प्रभाव छोड़ता है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ लाभान्वित होती रहेंगी।

दामोदर बचाओ अभियान और पर्यावरण के प्रति उनके विचार

मेरे साथ वे दामोदर बचाओ अभियान पर अक्सर चर्चा किया करते थे। उनका मानना था कि प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा किए बिना सतत् विकास संभव नहीं है। वे पर्यावरण संरक्षण को समाज की बेहतरी के लिए अत्यंत आवश्यक मानते थे और इस दिशा में हमेशा सक्रिय रहते थे। उनका यह दृष्टिकोण आज भी हमें याद दिलाता है कि पर्यावरण और विकास एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और हमें इस संतुलन को बनाए रखना चाहिए।

स्मृति और विरासत

आज विनोद रंजन जी हमारे बीच शारीरिक रूप से नहीं हैं, लेकिन उनकी स्मृति, उनका जीवन और उनकी सेवा हमारे दिलों में सजीव हैं। उनके संघर्ष, उनकी सिद्धांतप्रियता और जनसेवा के प्रति उनकी निष्ठा हमारे लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेंगी। वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची समाजसेवा का अर्थ है सबसे आखिरी व्यक्ति तक पहुंचना और उसे नेतृत्व का मौका देना।

विनोद रंजन जी का जीवन एक आदर्श था, जिसमें सादगी, करुणा और परिश्रम का मेल था। उनके संघर्ष, उनके विचार, और उनके कार्य हमारे समाज में सच्चे बदलाव के प्रतीक हैं। उनकी स्मृति हमें हमेशा प्रेरित करती रहेगी कि हम अपने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा और सच्चाई के साथ निभाएं। ■

बेहद संवेदनशील थे विनोद जी

- सीमान्त

विनोद जी हमें जब भी दिखते, चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए और कंधे पर एक ट्रैवल बैग टाँगे हुए दिखते। अक्सर वे या तो किसी यात्रा की शुरुआत करने जा रहे होते या किसी यात्रा की समाप्ति कर पटना वापस आने के क्रम में दिखते। विनोद जी का कहना था उनके माह भर के कार्यक्रम पहले ही तय हो जाते हैं और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही वे अलग-अलग बैठकों में शामिल होने के लिए यात्राएं करते हैं। उन्हें परेशानी तब होती है, जब यात्राओं और बैठकों का सिलसिला नहीं होता।

एक समाजकर्मी होने के नाते उनमें वे तमाम गुण मौजूद थे, जो कि एक सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता के होने चाहिए। किसी भी परिस्थिति में मदद के लिए हमेशा तैयार रहना उनमें से एक है। मैंने उन्हें कभी किसी की मदद से कभी 'ना' कहते नहीं सुना। यहाँ एक छोटी सी घटना का उल्लेख करना चाहूँगा। वर्ष 2020 के दिसंबर माह की बात है– मेरे पिता जी बहुत बीमार थे। हार्ट से संबंधित समस्या थी। स्थानीय स्तर पर कुछ फायदा नहीं होता दिख रहा था। समझ में नहीं आ रहा था, क्या करें? किसी ने बताया पटना शहर में हार्ट स्पेशलिस्ट है, जहां इलाज संभव है। मेरे लिए पटना का मतलब होता था विनोद जी। मेरे मोबाइल के शुरू के चार अंक 9470 विनोद जी के मोबाइल नंबर एक थे। इस वजह से मुझे वैसे उनका नंबर याद रहता था। उनसे बात हुई। उन्होंने कहा तुरंत ले आइए। यहां गांधी स्मारक निधि में रुकने के अलावा हर तरह से भी मदद कर देंगे। यह बात उस समय की है जब मेरा उनसे कोई लंबा चौड़ा परिचय तक नहीं था। वे सिर्फ मेरा नाम जानते थे और मैं उनका। मैं संवाद में काम करता हूं बस इतना छोटा सा परिचय था। उनके साथ बात होने के बाद दूसरे ही दिन से स्थानीय स्तर पर हो रहे इलाज से मेरे पिता स्वस्थ होने लगे। घटना के चार से पांच दिन हो गए। पिता को स्वस्थ देख मैं उनसे दोबारा कोई संपर्क नहीं किया। यह भी भूल गया कि मेरी विनोद जी से कोई बात हुई है। चार-पांच दिनों के बाद विनोद जी ने खुद कॉल करके हमारे आने के बारे में पूछा। मुझे उनसे बात करनी चाहिए थी। जाना या ना जाना अलग बात है। लेकिन कम से कम इतनी सूचना मुझे विनोद जी को जरूर देनी चाहिए थी। इतना ही नहीं उसके बाद भी वे कॉल करके इस संबंध में अक्सर जानने समझने का प्रयास करते रहते थे। यह एक छोटी सी घटना है, लेकिन अपने आप में बहुत कुछ बयां कर देती है। व्यक्ति जीवन में दूसरों के प्रति कितने संवेदनशील हो सकता है? इस घटनाक्रम से समझा जा सकता है।

पर्यावरण के प्रेमी थे विनोद रंजन। जीवन के दुःख सुख जीवी थे विनोद रंजन। दर्जनों संगठनों से रखते जीवंत रिश्ता सैकड़ों लोगों के दिलजोई थे विनोद रंजन। रुख़सत हुए वह ऐसे इस जहान से जैसे हमारे अपने थे विनोद रंजन। हम भूल नहीं पाएंगे कभी भी उनको। जख्मों के लिए दर्द निवारक रुई थे विनोद रंजन।

आज विनोद जी सशरीर तो मौजूद नहीं हैं, लेकिन उनके जीवन, सिद्धांत, समाज और व्यक्ति के प्रति उनका समर्पण हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। विनोद जी को सादर नमन! ■

गांधी, लोहिया व जेपी के भक्त थे विनोद रंजन

- महेश मिश्रा

समाजसेवी विनोद रंजन की दिनचर्या सादा जीवन उच्च विचार का पर्याय थी। वे गांधी, लोहिया, जेपी की जन सेवा व नेतृत्व के प्रेरक गुणों की जानकारी देने के साथ बिहार समेत पूरे देश में चल रहे जन आंदोलनों में सक्रिय रहे। शोषित, वंचित और किसानों को हक अधिकार दिलाने के लिए हमेशा भ्रमण करते रहते थे। जुड़ाव, संवाद में उनसे अक्सर मुलाकात होती थी। वे उदारता, संवेदनशीलता, धैर्य और सहानुभूति की भावना सभी के लिए रखते थे। वे लोगों की समस्याओं को समझते और उन्हें समाधान के लिए सही मार्गदर्शन करते थे। व्यक्तिगत झंझावातों को झेलने के बावजूद विनोद भाई समाज के विभिन्न समूह और संस्थाओं को सहयोग करते थे। समतामूलक समाज के विकास में अपना योगदान देते थे। वह अपना कार्य समर्पण भाव से करते थे। सभी साथियों के साथ सहज भाव से मिलते थे, उन्हें गुस्सा होते कभी नहीं देखा। अखबार के कूपन लॉटरी में पुरस्कार स्वरूप मिले नैनो कार मिलने की कहानी बहुत रोचक ढ़ंग से सुनाते थे। विनोद भाई अपनी पत्नी के साथ समाज सेवा में सक्रिय रहते थे। पटना समेत देश के विभिन्न संगठनों से उनका गहरा जुड़ाव था जो सभी संस्था के लिए हितकर था। उनको कभी बीमार होते नहीं देखा और जब बीमार पड़े तो दुनिया छोड़कर चले ही गए। विनोद भाई के असामयिक निधन से संवाद संस्था समेत शोषित, वंचित, उपेक्षित समाज के लिए संघर्षशील संगठन और संस्थाओं को अपूरणीय क्षति हुई। ■

साहसी एवं दयालु व्यक्ति थे विनोद रंजन

- राजकुमार

विनोद रंजन एक बड़े ही साहसी एवं दयालु व्यक्ति थे। एक बार की बात है मैं पटना किसी काम से उनके पास गया था। उनके पास प्रस्ताव रखा यहां की कोचिंग संस्थाएं कौन-कौन सी है और कहां-कहां है? तब उन्होंने कहा कि आप कहां-कहां खोजेंगे? यहां के कोचिंग सेंटर का बाजार बहुत बड़ा है। समय-समय पर दूरभाष से बातचीत हो जाया करती थी। प्रोजेक्ट की बैठकों में जब जब वे आते तो बड़ी शालीनता के साथ प्रश्न भी खड़ा करते थे और उत्तर सही न मिलने पर प्रश्न को लेकर खड़ा रहते और सही उत्तर पाने का इंतजार करते थे। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी स्थिति को समझने और उसी के अनुसार कार्य करते थे। उनके साथ बहुत समय रहने का मौका तो नहीं मिला लेकिन जितना समय मैं उनके साथ रहा और समय बिताया वह पल बहुत ही स्मरणीय पल था। उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला। 2008 की बाढ़ में उन्होंने बहुत ही साहसपूर्ण कार्य किया था और संस्था को बल प्रदान किया था। ■

तोको कहां ढूंढु रे बंदे

- कारू

अचानक हमलोगों के बीच से विनोद का जाना जैसे वाहिनी परिवार को अनाथ कर गया। पटना में कोई भी आयोजन होना है, तो विनोद रंजन का नाम सबसे पहले आना स्वभाविक सा हो गया था। किसी साथी का नम्बर चाहिए तो पहला नाम, विनोद से पूछ लो। पटना में किसी साथी को रूकना हो तो विनोद ही आश्रयदाता के रूप में सबसे पहले याद किए जाते। विनोद गाँधी निधि के मंत्री होने के बाद तो और भी पटना के पर्याय बन गए थे। पटना में ऐक्शन ऐड से जुड़ाव हो या मधुपुर में घनश्याम जी के यहां जुड़ाव हो हमदोनों एक साथ काम किए। जब जुड़ाव का काम 2008 में बाढ़ पीड़ित के लिए काम शुरु हुआ तब सुपौल जिले के त्रिवेनीगंज में बाढ़ राहत का काम हुआ तब दोंनों साथ -साथ किए। कुशहा से कुरसैला के दस दिनों तक की कठिन पदयात्रा में भी और साथियों के साथ-साथ विनोद भी थे। जब जुड़ाव का कार्यक्रम बिहार में बढ़ा और जबतक कार्यालय पटना में रहा, पहले नूतन जी धूरी बनी। नूतन जी के बाद विनोद ही धूरी बने। विनोद के जाने के बाद अभी तक वह जगह खाली है। अब शायद उसका वह जगह कोई नहीं ले पाएगा। जिस तरह कबीर, फूले, पेरियार, गाँधी, विनोबा, जयप्रकाश का स्थान खाली है, उसी तरह विनोद का स्थान पटना में खाली है।

विनोद सिर्फ पटना में ही सक्रिय नहीं थे, बल्कि बिहार का मधुबनी हो, पचमनियां का आंदोलन हो या चम्पारण और बोधगया का भूमि आंदोलन या झारखंड का सुदूर काठीकुंड की लड़ाई हो

कहीं भी जाना हो, बेझिझक कहीं भी चले जाना उस वातावरण में ढल जाना विनोद की खाशियत थी। शहरी वाला ठप्पा कभी विनोद पर कोई नहीं लगा सका। बिहार और झारखंड दोनों पर समान रूप से पकड़ थी उनकी।

शुरुआत में विनोद जी को कार्यकर्त्ता बनाने का श्रेय अनिल प्रकाश को जाता है। अनिल जी जब भी पटना आते विनोद को साये की तरह साथ रखकर उसे तराशने का काम किया। बाद के दिनों में नयी - नयी ज़िम्मेवारी सम्हालते हुए अंतिम गांधी विद्या संस्थान के अध्यक्ष भी चुने गए। इसके पहले ब्रजकिशोर मेमोरियल ट्रस्ट के भी जिम्मेवारी में रहे। उस स्थान पर रहते हुए वंचित समुदाय के हक-हकूक की लड़ाई लड़ने वालों को सम्मान दिलाने काम विनोद ने किया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जन पैरोकार के रूप में भी विनोद अगुआ बनकर उभरे। वे किसी के पैरोकार जितना थे उतने उसके गलत कामों के आलोचक भी थे। बोधगया में पिछले वाहिनी मित्र मिलन में चंदा का पैसा जमा होने के बाद बोधगया आंदोलन के लिए बना कोष में पैसा डालने का प्रस्ताव आया जिसका एक साथी ने विरोध कर दिया, विनोद की भी राय थी कि पैसा बैंक में जमा हो। मुझे यह प्रस्ताव व्यवहारिक नहीं लगा इसलिए उसपर मेरी भी सहमति नहीं बनी और पैसा खाते में जमा नहीं हुआ। जिस साथी को कोषाध्यक्ष चुना गया वो बीमार हो गये, अतः पैसा कुछ महीने में हाथ से खर्च हुआ, चंदा का रशीद कहीं गुम हो गयी। लेकिन मैंने जो भी खर्च किया उसका हिसाब दे दिया, परन्तु साथियों को पूरा विश्वास मुझ पर नहीं हुआ और कुछ साथी मुझ पर पूरा हिसाब नहीं देने का झूठा आरोप लगा दिये जिसकी लाख सफाई के बाद भी उस आरोप से बरी नहीं हो पाया। काश उस दिन मैंने विनोद की बात मानी होती तो इस तरह के तोहमत मुझ पर नहीं लगते।

विनोद तुमको भुलाना नामुमकिन है, हमेशा तुम्हारा साया साथ साथ रहेगा। ■

विनोद रंजन : एक हंसते-मुस्कुराते जीवन के जाने की व्यथा

- डॉ योगेन्द्र

मनुष्य संसार से पाँच इंद्रियों से जुड़ता है। ये इंद्रिय हैं– जिह्वा, आँखें, कान, त्वचा और नाक। हरेक इंद्रिय संसार से लेता है और संसार को देता है। यानी ये इंद्रिय लेनदेन का माध्यम है। जिह्वा स्वाद लेती है। स्वाद एक रस है– भोजन-रस। आँखें रूप पान करती हैं– रूप-रस। कान सुनने का काम करता है यानी संगीत-रस और त्वचा स्पर्श का माध्यम है– स्पर्श-रस। नाक से सुगंध रस। हर इंद्रिय में रस है– जीवन-रस। लोग बूढ़े होते जाते हैं। उम्र बढ़ती जाती है, तो उसके रस भी घटते जाते हैं। जिह्वा में स्वाद लेने की क्षमता जाती है। अंतिम वक़्त में लोग खाना छोड़ देते हैं। आँखें जो फूलों को देख कर विस्मित होती थीं, वे थिर हो जाती हैं। रूप में रस नहीं रह जाता। कान दम तोड़ देता है। त्वचा में सिहरन नहीं होती, झुरियाँ पड़ जाती हैं। जवानी में रस भोगने की इच्छा होती है और तरोताज़ा रहती है। बहुत बूढ़े भी ऐसे होते हैं जिनमें कोई न कोई रस तेज रहता है। रामकृष्ण परमहंस की प्रायः वासनाएँ मर गयी थीं, लेकिन भोजन की वासना बची थी। उन्हें भोजन बहुत प्रिय था। जब वह भी थम गई तो उनकी पत्नी शारदा ने कहा कि संसार से जुड़ने का जो अंतिम साधन था, वह ख़त्म हो गया है। अब वे नहीं ठहरेंगे। विनोद रंजन जब बीमार पड़े और महावीर कैंसर अस्पताल में भर्ती हुए, तो वे कभी स्वस्थ होते , कभी अस्वस्थ तो उन्होंने शायद मज़ाक़ में कहा होगा- मटन खिलाओ, सब बीमारी भाग जायेगा। विनोद रंजन को मटन बहुत पसंद था और वे जम कर खाते थे। रणजीव जी को भी मटन में स्वाद आता था। अब दोनों

नहीं हैं। लगता है कि हृदय का कोई कोना ख़ाली हो गया है। दोनों की जिह्वा सक्रिय थी। स्वाद उनके नस- नस में बसा था। अभी वैसी कोई उम्र भी नहीं हुई थी।

मैंने दिवंगत आशुतोष, रणजीव पर संस्मरण लिखे। एक संक्षिप्त अंतराल में ये तीनों साथी चले गये। आशुतोष और रणजीव लेखक भी थे, सामाजिक कार्यकर्ता भी। साथियों के मध्य उनकी एक अलग पहचान थी, लेकिन विनोद रंजन कार्यकर्ता थे। ख़ालिस कार्यकर्ता। आप तेज तर्रार हैं। लिखना, बोलना जानते हैं, तो आपकी एक जगह बन जाती है, लेकिन कार्यकर्ता बनना बहुत मुश्किल काम है। अपने ऊपर नियंत्रण रखना, यश की न कामना, न और चीज की भूख- यह सामान्य बात नहीं है। मैंने विनोद को कभी इस बात के लिए रूठते या गुस्साते नहीं देखा कि मुझे मंच पर नहीं बैठाया गया या मुझे माइक नहीं दी गयी। बोलते भी थे तो बहुत कम। और लोग तो माइक पकड़ने के बाद सबकुछ पिला देना चाहते हैं, लेकिन विनोद इसमें अनिच्छुक ही रहे। मैंने उसे कभी उदास नहीं देखा। जब भी मिले या फ़ोन पर बात की, तो हंसते हुए ही। ऐसे समय में जब आदमी को उदासी घेर लेती है, वे इसमें निस्पृह रहे। उन्हें कभी अपना दुख दर्द बोल कर किसी की कृपा पाने की इच्छा नहीं हुई। उन्होंने अपने परिवार के बारे में भी मैंने कभी बताते नहीं देखा। बहुत से लोग अपनी पत्नी या बच्चों के बारे में राम कथा कहते रहते हैं। विनोद इससे अलग थे।

मसौढी में विभाजित हुई वाहिनी का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें मैं शामिल था। विजय उसके संयोजक चुने गये थे। नूतन भी कार्यसमिति में चुनी गई और मैं भी। अन्य साथी भी थे। धीरे-धीरे वाहिनी क्षीण होती गयी। यों इसके बावजूद आंदोलन चलते रहे। इनमें से एक गंगा मुक्ति आंदोलन है, जिसमें वाहिनी के अनेक साथी शामिल थे। प्रभाकर,

रामपूजन, विनोद आदि सभी एक साथ सक्रिय रहे। विनोद रंजन जैसे साथी अभावों में ही रहे। उन्होंने अपने परिवार को कैसे चलाया, यह मैं नहीं जानता। इतना जानता हूँ कि उसने अंतर्जातीय शादी की थी। वह भी एरेंज्ड। गया के एक प्रमुख साथी थे– प्रभात शांडिल्य। उनकी बहन से उनकी शादी हुई और इसका निर्वाह किया। कभी दावा नहीं किया कि मैंने कोई तीर मारा है। बहुत सारे लोगों की अंतर्जातीय शादी में ढोल बजे या बजाये गए। अनेक लोगों ने इसका निर्वाह भी किया, लेकिन कई कशमकश के शिकार रहे, मगर विनोद रंजन इसमें अपवाद रहे। दोनों ने सहजीवन का पूरी शिद्दत से निभाया। वे अंतिम कुछ वर्षों में गाँधी स्मारक निधि, पटना के मंत्री भी रहे। वे कई संस्थाओं से जुड़े– संपूर्ण क्रांति मंच, बिहार दलित विकास मोर्चा, सर्वोदय मंडल, छात्र युवा संघर्ष वाहिनी, गंगा मुक्ति आंदोलन और संवाद। वे प्रायः बैठकों में मौजूद रहते और क्षमता भर काम करते रहे। पटना में उनका स्थायी निवास था। पिता आई आई टी, पटना के प्राचार्य रहे। वर्ष 2000 के आसपास उनके छोटे भाई की हत्या हुई। वे वेंटनरी डॉक्टर थे और मधुबनी ज़िले में पदस्थापित थे। उनके जीवन का यह दुखद क्षण था, जब उनकी आँखों से आँसू रूकते नहीं थे। विनोद रंजन को कौन सी बीमारी हुई थी, इसे डॉक्टर भी सही-सही पहचान नहीं सके। पटना एम्स से लेकर दिल्ली के निजी महँगे अस्पताल में भी भर्ती हुए। काफ़ी खर्च हुए। चिकित्सा की उच्च तकनीक मौजूद है , लेकिन आज भी बहुत से लोग वैसी अनजानी बीमारी के शिकार होते हैं। जो भी हो। एक हँसता-मुस्कुराता और सक्रिय जीवन की ऐसी समाप्ति परिवार, समाज और दोस्तों के लिए बहुत बुरी होती है। ■

गांधीवादी विचारधारा पर चलने वाले सामाजिक योद्धा थे विनोद रंजन

- सुनील सरला

गांधीवादी विचारधारा पर चलने वाले विनोद कुमार रंजन जी को प्रथम बार देखा था 15 जुलाई 2018 को ए एन सिन्हा इंस्टीव्यूट, पटना में बाल अधिकार विषय पर संवाद सह एक्शन कार्यक्रम में। उसके बाद किसी न किसी सामाजिक कार्यक्रम में मुलाकात होती रही। पीयूसीएल के कार्यक्रम में चंद्रशेखर भवन मुजफ्फरपुर में दूसरे दिन सुबह में विनोद कुमार रंजन जी से व्यक्तिगत मुलाकात मंजू जी ने कठपुतली कलाकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में करायी थी। मुजफ्फरपुर में ग्रामीण जन कल्याण परिषद के कार्यालय में मुलाकात हुई थी। अपने साथ झोला से कुछ पत्रिका रखे थे जो हमलोग को दिए और बनारस में चल रहे आंदोलन में शामिल होने के लिए भी कहे। उनके सीख के कारण ही गांधी विचार एवं विरासत को बचाने के लिए अन्याय के विरुद्ध सच का साथ देने के लिए, कानून के राज्य और संविधान की रक्षा के लिए हमसब वाराणसी पहुंचे। सरकार के अवैधानिक कब्जे और मनमानेपन के खिलाफ वाराणसी राजघाट में सर्व सेवा संघ द्वारा 100 दिवसीय सत्याग्रह एवं आन्दोलन को अपना समर्थन देने के लिए बनारस राजघाट गये। आप लोग आन्दोलन में शामिल होंगे तो आंदोलन को बल मिलेगा। हमें आपके आने का इंतजार है।

बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष और बिहार स्टेट गांधी स्मारक निधि, पटना के मंत्री विनोद कुमार रंजन जी से WSF की जनरल काउंसिल की मीटिंग में मुलाकात हुई। 6 व 7 अगस्त 2023 को विश्व सामाजिक मंच (WSF) भारत की जनरल काउंसिल की मीटिंग पटना स्थित बिहार वालेन्टियरी हेल्थ एसोसिएशन में आयोजित थी। इस मीटिंग में बिहार के प्रमुख संगठनों के प्रतिनिधि को आमंत्रित किया गया था। राष्ट्रीय जनरल काउंसिल की मीटिंग में भाग लेने हेतु बिहार वर्किंग ग्रुप के तरफ से मैं भी आमंत्रित था। वहां कई संगठन के जान पहचान के साथी से मुलाकात हुई उसी में डभौरा, रीवा मध्यप्रदेश के सामाजिक कार्यकर्ता जगदीश प्रसाद सिंह जी के यहां सी जी नेट जन पत्रकारिता जागरूकता यात्रा में जाना हुआ था। साथ ही बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष और बिहार स्टेट गांधी स्मारक निधि, पटना के मंत्री विनोद कुमार रंजन के साथ स्मृति स्वरूप एक तस्वीर भी ली। लेकिन अफसोस कुछ दिनों के बाद ही सोशल मिडिया से जानकारी हुई की विनोद कुमार रंजन जी हमलोग के बीच नहीं रहे। गांधीवादी विचारधारा पर चलने वाले विनोद कुमार रंजन जी के साथ काम करने एवं सरकार के अवैधानिक कब्जे और मनमानेपन के खिलाफ वाराणसी राजघाट में सर्व सेवा संघ द्वारा सत्याग्रह में शामिल नहीं होने का अफसोस रहेगा। उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा और समाज के लिए समर्पण सभी लोगों के लिए सीख हैं। गांधीवादी विचारधारा पर चलने वाले सामाजिक योद्धा विनोद कुमार रंजन जी को विनम्र श्रद्धांजलि। ■

असमय दुनियां से चला गया हमारा प्यारा साथी

- अनिल प्रकाश

विनोद, इतनी जल्दी क्या थी? प्रकृति के आगे किसी का वश नहीं चलता। जीवन और मृत्यु सत्य हैं, एक दिन सबको जाना है और खाली हाथ जाना है।

एक दलित (पासी) परिवार में पैदा हुआ विनोद इतना सक्रिय था कि हमलोग कहते थे कि विनोद रंजन के पैर में चक्का लगा है।

आपातकाल के बाद तमाम लोग जेलों से छूटकर बाहर आ रहे थे। उसी दौरान जब मैं छात्र संघर्ष युवा वाहिनी का बिहार का संयोजक चुना गया, तभी से विनोद रंजन हमारे निकट संपर्क में थे। बोधगया भूमि मुक्ति आंदोलन के दौरान विनोद रंजन इंटर के छात्र रहे होगें। उनके पिता पढ़े लिखे थे। आईटीआई के प्रिंसिपल थे। पटना में जब उनके घर पहली बार गया था विनोद के पिता, माताजी, छोटी बहन भाई मुझसे ऐसे मिले थे जैसे कोई परिवार के सदस्य बहुत दिन बाद वापस मिलने आएं हो। विनोद के घर में मैं कई कई दिनों तक रुकता था और विनोद की वृद्ध दादी भी थीं जो मुझसे अत्यधिक स्नेह रखती थीं। विनोद का छोटा भाई वेटनेरी पशु चिकित्सक था। मधुबनी के किसी सरकारी चिकित्सालय में पोस्टेड था। अज्ञात लोगों ने उसकी हत्या कर दी थी। विनोद परिवार में अकेला रह गया था।

विनोद संघर्ष वाहिनी का कार्य करने के साथ साथ दूसरे सम विचारी, संगठनों, व्यक्तियों, संस्थाओं और देश भर के आंदोलनकारी समूहों से मिलने और उनलोगों से हमलोगों का संवाद करवाने का कार्य करते। पटना के हर जनपक्षीय पत्रकार, फोटोग्राफर और संपादक से विनोद की जान पहचान रहती थी। लेकिन अखबारों में उसका नाम छपे, फोटो लगे ऐसा वह सोचता भी नहीं था। शायद ही उस जमाने का कोई राजनेता, एम एल ए, एम पी या मंत्री, पक्ष विपक्ष का नेता रहा होगा जिससे विनोद का परिचय और संवाद नहीं हुआ होगा। लेकिन किसी ठेकेदार, भ्रष्ट अधिकारी की नाजायज पैरवी और दलाली करके पैसे उगाहने का काम विनोद पाप समझता था।

1984 में भोपाल में हुई जहरीली गैस लीक दुर्घटना में हजारों लोग की मौत हुई थी। वहां वैज्ञानिक अनिल सदगोपाल की पहल से जनमुहिम छिड़ चुकी थी। विनोद चुपचाप वहां चले गए और हमलोग से अनिल सदगोपाल का संवाद कराया। तब हम कहलगांव, जिला भागलपुर (बिहार) में गंगा मुक्ति आंदोलन के काम में सक्रिय थे। उसी दौरान दिल्ली में राधा कृष्ण जी (गांधी शान्ति प्रतिष्ठान) के तत्कालीन सचिव एवं अनुपम मिश्र ने देश के पर्यावरण पर एक सेमिनार बुलाया था। मैने भागलपुर से बाहर जाना बंद कर रखा था लेकिन राधा कृष्ण जी के प्रेमपूर्वक दवाब था और विनोद रंजन मुझे खींच कर दिल्ली ले गए थे। संभवतः राधा कृष्ण जी ने ही विनोद को मुझे दिल्ली ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी होगी। वहीं मुझे अनिल सादगोपाल, अनिल अग्रवाल और सुनीता नारायण मिली, वहीं कर्नाटक के अपीको (जंगल बचाओ) आंदोलन के नेता मिले। राजस्थान के लोग मिले। चिपको आंदोलन के लोग मिले। एक दिन सुरेंद्र मोहन जी से मुलाक़ात हुई। उसी दौरान विनोद और सुनीता नारायण के साथ मैं अनिल अग्रवाल के दफ़्तर में उनसे मिलने नेहरू नगर स्थित सेंटर फॉर साइंस एंड एनवॉर्नमेंट (सी एस ई) में गया था। उस समय उनका कार्यालय मात्र दो कमरों में चल रहा था। बाद में यह अंतराष्ट्रीय ख्याति का विश्वसनीय पर्यावरणशोध संस्थान बना।

जब छात्र युवा संघर्ष वाहिनी का राष्ट्रीय कार्यालय राजेंद्र नगर, पटना में बना और उसके संचालन के लिए महीने में एक सप्ताह पटना में रहने लगा, उस दौरान विनोद निरंतर कार्यालय आते थे। इसी बीच आईबी के एक अधिकारी ने जो मेरा मित्र था, ने बताया कि आईबी का एक इनफॉर्मर वाहिनी की आंतरिक बैठक की रिपोर्ट लीक करवा रहा है। वाहिनी के कुछ वरिष्ठ मित्रों का शक विनोद रंजन पर था। मैने तत्काल विनोद को कार्यालय के बाहर के कामों में लगा दिया। एक महीने बाद आईबी के हमारे मित्र ने सूचना दी की वह व्यक्ति विनोद नहीं हैं दूसरा हैं। विनोद मेरा अत्यंत प्रिय साथी था लेकिन संगठन के हित को देखते हुए मैने यह कड़ा फैसला लिया था। बाद में वाहिनी के संगठन एवं राष्ट्रीय कार्यालय की गतिविधियों में विनोद को सक्रिय होने का पूरा अवसर एवं प्रोत्साहन दिया गया।

कुछ दिन बाद जब लखनऊ में छात्र युवा संघर्ष वाहिनी की राष्ट्रीय परिषद का एक विशेष सम्मेलन हुआ तो उस दौरान मैंने मंच से उस घटना का जिक्र करते हुए विनोद की तारीफ की। वहां मौजूद विनोद फूट फूट कर रोने लगा। उसको अजीब लग रहा था कि अनिल प्रकाश जैसा प्रिय साथी ने भी उसपर शक किया। मैंने उसके आंसू पोछे थे और उसे गले लगा लिया था मैने उसे समझाया था की एक क्रांतिकारी कार्यकर्त्ता का दिल का एक फलक पत्थर की तरह कठोर और दूसरा फलक मक्खन की तरह मुलायम होना चाहिए। ■

विनोद रंजन का जाना....

- शाहिद कमाल

11, 12 सितंबर 2023, विनोबा जयंती और राष्ट्र सेवा दल की कार्यकारणी की बैठक, मकेश्वर रावत जी का कार्यालय परिसर, बारिश के कारण सभी जगह जल जमाव, 10 की रात सर्व सेवा संघ के मंत्री अरुण कुशवाहा जी के साथ विनोद रंजन जी का जमुई पहुंचना मेरा भी भागलपुर से लौटकर किऊल में विनोद जी का इंतजार करना और उनके साथ ही जमुई पहुंचना वहां एक ही बिस्तर पर सोना। दो दिनों की मीटिंग के बाद दूसरे दिन रात में मैं लौट गया वे भी अरुण कुशवाहा जी के साथ उस के दूसरे दिन पटना लौट गए। हमारी और विनोद जी की हर दूसरे तीसरे दिन बात होती रहती थी। जमुई से लौटने के बाद मुझे बुखार आ गया तीन चार दिन बाद मैं स्वस्थ हो गया। फिर ख्याल आया की जमुई से लौटे हुए एक सप्ताह से ज्यादा हो रहा है विनोद जी का फोन क्यों नहीं आया?, मैंने जब उन्हें फोन किया तो विनोद जी ने बताया की जमुई से लौटने के बाद बार बार बुखार आ रहा है होम्योपैथी दवा खा रहे है। मैंने राय दी की 10 दिन से आप होम्योपैथी दवा खा रहे अब तक ठीक नहीं हुए है तो अब आप को एलोपैथ दवा लेनी चाहिए। एक डॉक्टर से दिखाया उसका इलाज चलता रहा फिर उसी की राय से एक नर्सिंग होम में भारती हुए कई तरह का टेस्ट चलता रहा, कैंसर और बोन मैरो का भी टेस्ट हुआ। कैंसर के कोई आसार नहीं निकले परंतु बोन मैरो में इन्फेक्शन का पता चला फिर उन्हें दिल्ली ले जाया गया और वहीं इलाज के दौरान अंततः उनकी मृत्यु हो गई।

15 अगस्त 1947 को आज के आधुनिक भारत का जन्म जिस आधुनिक मूल्यों – लोकतंत्र समता, न्याय, व्यक्ति की स्वतंत्रता की बुनियाद पर खरी हुई थी आज उसी को न केवल कमज़ोर करने की बल्कि मिटाने की खुली साजिश चल रही है। समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता इंदिरा गांधी ने संविधान के उद्देशिका में जरूर जोड़ा परंतु ये मूल्य पहले से ही संविधान के प्रावधानों में निहित था, इंदिरा गांधी संघियों के चालों को समझती थी, लोकतंत्र बिना समता और धर्मनिरपेक्षता के अधूरा ही रहेगा। आज इन मूल्यों को पुनः प्राप्ति और मजबूत करने का समय है ऐसे समय में साथी विनोद रंजन का जाना एक अपूरणीय क्षति है। हम और हमारे जैसे अनेक सामाजिक राजनैतिक काम करने वाले लोगों के लिए जो पटना में नहीं रहते हैं और पटना में कोई कार्यक्रम करना है, तो मैं इत्मीनान रहता था कि पटना में विनोद रंजन है तो सारी व्यवस्था हो जाएगी चाहे आयोजन के लिए जगह की व्यवस्था हो, खाना की व्यवस्था या पैसे की व्यवस्था हो, सभी चीज़ों की एक लंबी लिस्ट उनके पास तैयार होती थी।

विनोद रंजन विद्यार्थी जीवन में ही छात्र युवा संघर्ष वाहिनी में आ गए थे, जब वाहिनी ने बोधगया में भूमि के सवाल को लेकर मठ के खिलाफ़ आंदोलन शुरू किया तो वहां एक कर्मठ कार्यकर्ता के तौर पर अपना काफी समय लगाया। ऐसे ही मजबूत कार्यकर्ता के प्रयास के कारण कर्पूरी ठाकुर की सरकार को मठ की जमीन गरीब भूमिहीनों में वितरित करनी पड़ी और वाहिनी ने एक सफल आंदोलन का नेतृत्व कर इतिहास में नाम दर्ज कराया।

गंगा नदी पर जमींदारों का कब्जा था। बिना उनकी इजाजत के न कोई मछली पकड़ सकता था और न नाव चला सकता था। इजाजत के लिए पैसे देने होते थे। छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के नेतृत्वकर्ता साथी रामशरण जी, अनिल प्रकाश जी और अन्य साथियों के सहयोग से मछुआरों और अन्य

लोगों की परेशानियों को लेकर गंगा मुक्ति आंदोलन का गठन हुआ, विनोद रंजन ने आंदोलन को मजबूत करने में अपना काफी समय लगाया। लंबी लड़ाई के बाद जीत हुई। गंगा जमींदारों से मुक्त हुई पर अब भी मछुआरों के जीविका,पर्यावरण जैसे मुद्दों को लेकर गंगा मुक्ति आंदोलन संघर्षरत हैं पर वहां संघर्षरत साथियों को विनोद रंजन की कमी खटकेगी ही।

80 के दशक में गांधी विनोबा जयप्रकाश और लोहिया से प्रभावित दूसरी तरफ अंबेडकर और मार्क्स से प्रभावित साथियों ने सम्पूर्ण क्रांति मंच बनाया जिसके वी एम तारकुंडे राष्ट्रीय संयोजक बने। 80 के दशक में एक और महत्वपूर्ण घटना हुई सांप्रदायिकता का उभार, बिहार में उस से लड़ने के लिए कई संगठन बने एकता अभियान, एकता बिरादरी, सांप्रदायिकता विरोधी मंच, सांप्रदायिकता सद्भावना मंच। जिले जिले में सांप्रदायिकता से लड़ने के लिए नागरिक मंच और ऐसे कई संगठन, अधिकांश संगठनों और अभियानों में विनोद जी की सक्रिय भागीदारी होती थी। उस लड़ाई में वे पूरी सक्रियता के साथ भूमिका निभाते थे। मानवाधिकार संगठन "लोक स्वतंत्र संगठन के बिहार राज्य कार्यकारणी के सदस्य रहे। सिटीजंस फॉर डेमोक्रेसी में भी वे सक्रिय थे।

बिहार लंबे समय से बाढ़ का प्रकोप झेलता आ रहा है। 2008 में कोशी बांध रख रखाव के अभाव में टूट गया। सहरसा, सुपौल और मधेपुरा में भारी तबाही मच गई। विनोद जी वहां भी विभिन्न एजेंसियों से संपर्क कर राहत के कामों में जुट गए। बाढ़ की विभीषिका के कारण उत्तर बिहार का यह इलाका देश का सब से गरीब इलाका है। ये बहसें खूब होती हैं पर इस समस्या का स्थाई निदान का अभी तक कोई हल नहीं निकला गया है। विनोद जी इस पर चिंता जताते थे और हल के रास्ते सोचते थे।

शोसलिस्टों द्वारा युवाओं में काम करने के लिए 1941में बनाए गए संगठन "राष्ट्र सेवा दल" में भी सक्रिय थे। 1992 में जब सुरेंद्र मोहन जी राष्ट्र सेवा दल में सक्रिय भूमिका निभाने लगे और बिहार में सक्षम कार्यकर्ता को तलाशना शुरू किया तो उस में विनोद जी को भी जोड़ा। बाद में आकर विनोद जी बिहार प्रांत के मंत्री भी बने। छात्र युवा संघर्ष वाहिनी निर्दलीयता के मूल्यों में विश्वास रखती थी और 30 वर्ष पूरा होने पर वहां से रिटायर होना लाजमी था। ऐसे में बहुत से लोग अलग अलग संगठनों में जाने के लिए बाध्य हुए। विनोद रंजन जी ने सर्वोदय में जाना पसंद किया। बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष बने, सभी जिला में सर्वोदय मंडल सशक्त बने इस का प्रयास किया। सर्वोदय मंडल के अंतिम समय तक अध्यक्ष रहे। बिहार स्टेट गांधी स्मारक निधि के भी लंबे समय से मंत्री थे। ऐसे समय में जब गांधी स्मारक निधि निष्क्रिय हो रही थी आगे आकर उन्होंने उसे संभाला और उसे जीवंत बनाया।

जन आंदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय में भी वे सक्रिय भूमिका निभाने लगे। विनोद रंजन ने अपनी पूरी जिंदगी समाज के लिए समर्पित कर दिया था। उन्हें सतरंगी सलाम। विनोद आप की कमी हमेशा खलेगी और संघर्ष के हर मोड़ पर आप याद आते रहेंगे। ■

वैसा अनोखा आदमी मुझे अभी तक नहीं मिला

- प्रभाकर कुमार

विनोद हमारे बीच नहीं हैं। शायद ही ऐसा कोई दिन हो, जब वे याद न आते हों। विगत चार दशकों से रिश्ता था– सांगठनिक और व्यक्तिगत। इन चार दशकों में बहुत उतार चढ़ाव आया। एक दूसरे के बीच काफी स्नेह था तो कभी नोंक झोंक, पर कभी भी मनमुटाव नहीं हुआ। आदमी अलबेला था, ऐसा अनोखा आदमी शायद कोई मिले। अभी तक तो वैसा अनोखा आदमी मुझे नहीं मिला। हमलोग आपस में बहुत खुले हुए थे। सामाजिक राजनीतिक चर्चाओं के साथ साथ व्यक्तिगत बातें भी बहुत हुआ करती थी। कभी कभी बहुत सरल तो कभी कभी आम आदमी की तरह। दोस्तों, साथियों या अन्य लोगों के सन्दर्भों में भी हम लोग खुलकर एक दूसरे से चुटकी लेते थे। हम दोनों हमउम्र थे। सन 1962 में दोनों का जन्म हुआ था।

विद्यालय-छात्र जीवन में विनोद का जुड़ाव आर एस एस से था। आर एस एस की शाखाओं में वे नियमित भाग लेते थे। उन्हीं शाखाओं के सहभागी आज केंद्र में एक काबीना मंत्री भी हैं। विनोद रंजन जब छात्र युवा संघर्ष वाहिनी में शामिल हुए तो सामाजिक कार्यों में बड़ा से बड़ा जोखिम उठाया जिसमें हम लोग साथ थे। उन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ, जिसे अंतिम क्षण तक जीया। विनोद के पिता जी आई टी आई कॉलेज में प्राचार्या थे। संयोग से जिस परिवार में जन्म लिया वह दलित वर्ग से था। चार भाई बहनों में सबसे बड़े थे। दो बहन दो भाई। स्नातक तक की शिक्षा ली। छोटी बड़ी सरकारी नौकरी विनोद को

आसानी से मिल सकती थी। दलित वर्ग से होने की न तो आत्महीनता थी और न ही कुछ पाने की लालसा। भाई प्रमोद इनसे छोटा था जो बिहार सरकार में पशु चिकित्सक के पद पर घोघरडीहा (मधुबनी) में कार्यरत था। अब वह भी इस दुनिया में नहीं है। प्रमोद की हत्या कर लाश गायब कर दी गयी थी। उस काण्ड के सिलसिले लगातार पंद्रह दिनों तक घोघरडीहा (मधुबनी), नेपाल, मधेपुरा, आलमनगर के दौरा में मैं भी साथ था। कहानी लम्बी है। पहली बार विनोद को विलाप करते हुए देखा। विनोद ने उस विषम परिस्थिति का सामना बहुत ही हिम्मत के साथ किया जो काबीले तारीफ था। व्यक्तिगत तौर पर हम लोग इतने जुड़े हुए थे कि किसी भी सुख दुःख में एक दूसरे के लिए खड़े मिलते थे। छात्र युवा संघर्ष वाहिनी का कार्यक्रम हो या संपूर्ण क्रान्ति मंच का, पोस्टर साटने से लेकर दरी बिछाने का काम हम लोग साथ साथ बेहिचक किया करते थे। गंगा मुक्ति आंदोलन का नौका जुलूस कुरसेला से पटना के निकला तो प्रारम्भ में निराशाजनक स्थिति से काफी चिंता हुई। डेंगी नाव पर बैनर माईक लगाकर कई दिनों तक पटना से बाढ़ सोनपुर हाजीपुर नौका जुलूस की तैयारी में हम लोग साथ साथ लगे रहे जिसके उपरान्त सैकड़ों नाव पटना के जुलूस में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। डेंगी नाव पर विनोद, मैं और संजय सुमन सवार थे। कभी कभी नाव ऐसी डोलती थी लगता था अब डूबी कि तब। उस कार्यक्रम की सफलता में विनोद की अहम् भूमिका थी। दुर्भाग्य से संजय भी इस दुनिया में अब नहीं है। 02 अक्टूबर 2024 को उनका भी निधन हो गया। संध्या - विजय की अंतर्जातीय शादी बहुत चर्चित हुई थी। विजय, संध्या से प्रेम करता था जिसकी शादी जबरदस्ती अन्य लड़की के साथ की जा रही थी। विजय भाग कर हम लोगों के पास आया। हम लोगों ने विजय को भरपूर सहयोग तथा पर्याप्त संरक्षण दिया। पटना के एक मकान में गुप्त रूप से विजय को रखने की जिम्मेवारी मुझे दी गयी और संध्या को पटना लाने की जिम्मेवारी विनोद को। इसी बीच विनोद रंजीत, मुन्ना और प्रभाकर (मुझ पर) पर विजय के अपहरण का मुकदमा कर दिया गया और वापसी में, विनोद गिरफतार हो गए। बड़ी मुश्किल से पुलिस के चंगुल से संध्या को बचाते हुए पटना लाये। यह अपने आप में अनूठी कहानी है। संध्या - विजय की शादी न्यायिक प्रक्रिया के उपरान्त हम सभी को जमानत मिली। सभी कथित अभियुक्त पुलिस को चकमा देकर किस प्रकार संध्या विजय की अंतर्जातीय शादी कराई। विस्तार से इस पर एक उपन्यास लिखा जा सकता है। इतना बड़ा जोखिम लेना कोई आसान काम नहीं था। दूसरी अंतर्जातीय शादी की घटना का जिक्र करना भी आवश्यक है जिसमें विनोद की भूमिका जोखिम भरी थी। कृष्णा पप्पू की शादी। विनोद ने दोनों को शादी के उपरांत एक सप्ताह अपने घर पर रखा था, यह जानते हुए कि आपराधिक मुकदमा होना निश्चित है। विनोद ने खुद अंतर्जातीय शादी की। हम सब के लिए वह पहला शादी समारोह था जिसमें बारात साज कर किसी गाँव में अन्तर्जातीय शादी हो। उसमें भी एक पक्ष दलित हो। बिहार में नरसंहार का जब दौर था उस वक्त शायद कोई ऐसी जगह जहां विनोद न गए हों। वाथे, मियांपुर अप्सर, लक्ष्मणपुर आदि नरसंहार के पीड़ितों के पक्ष में वे मुस्तैद होते थे चाहे वह किसी भी जाति संप्रदाय के हों। अहिंसा के प्रबल समर्थक थे और दलित, पीड़ित के पक्षधर। दलितों के मुद्दे पर भी विनोद ने बिहार दलित अधिकार मोर्चा बैनर तले कई निर्णायक काम किया। झुग्गी झोपड़ी संघर्ष में भी विनोद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही। विनीद रंजन बिहार सर्वोदय मंडल व ब्रजकिशोर स्मारक, पटना के अध्यक्ष तथा बिहार स्टेट गाँधी स्मारक निधि के मंत्री के पद पर भी काम किया। अनगिनत संस्था, संगठनों, व्यक्तियों से जीवंत जुड़ाव था। किसी संस्था। संगठनों द्वारा किसी तरह का कार्यक्रम हो उस में विनोद न पहुंचे ऐसा हो नहीं सकता था। बिहार स्टेट गाँधी स्मारक निधि का मंत्री विनोद थे और अध्यक्ष मैं। गांधीवादी विचारधारा के कार्यक्रमों हमेशा लगे रहते थे चाहे वह रचनात्मक हो या आंदोलनात्मक। सरकारी दमन के विरुद्ध आयोजित बनारस के आंदोलन में भी वे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिए और सर्व सेवा संघ के परिसर को पुलिस द्वारा जबरन ध्वस्त करने के खिलाफ डट कर खड़े रहे। उनकी तबियत बनारस में ही बिगड़ चुकी थी। पटना से बाहर जमुई का कार्यक्रम अंतिम साबित हुआ और सितम्बर 2023 नूतन स्मृति व्याख्यानमाला, पटना का अंतिम। कौन जनता था कि गाँधी संग्रहालय, पुटना का वह कार्यक्रम विनोद के लिए आखिरी होगा। 1 अक्टूबर 2023 की सुबह विनोद ने फोन कर कहा कि वे 2 अक्टूबर 2023 को गाँधी स्मारक निधि में आयोजित गांधी जयंती में शरीक नहीं हो सकेंगे क्योंकि उनकी तबियत ठीक नहीं। उनकी आवाज काफी भर्राई हुई थी जिसके कुछ ही दिन बाद पटना के एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती किया गया। पटना से दिल्ली तक अथक इलाज बावजूद जानलेवा बीमारी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और 10 और दिसम्बर 2023 को विनोद ने सदा के लिए हम सब से विदा ली। रचना, संघर्ष और संगठन में समान रूप से अधिकार रखने वाले विनोद रंजन की कमी आज सभी को बहुत खल रही है। ■

साफ़गो पसंद इंसान थे विनोद रंजन

- इश्तियाक़ अहमद

विनोद रंजन जी से मेरा परिचय मुख़्तसर ही था। कुछ बैठकों, कुछ आयोजनों और चंद मुलाक़ातों के ज़रिये उनके बारे में जो कुछ जानने-समझने का मौक़ा मिला। उसने मेरे ऊपर जो असर डाला वो काफ़ी गहरा था। मुस्कुराते चेहरे के पीछे गहराई से सोचने वाले एक साफ़गो इंसान की छवि उनके चले जाने के बाद भी अरसे तक बनी रहती थी। जल-जंगल-ज़मीन का मामला हो या पर्यावरण, नदी, पानी का मसला हो; या फिर खाद्य सुरक्षा और खेती-किसानी की बात हो उनकी जनपक्षीय समझदारी हमेशा प्रभावित करती रही और कहीं न कहीं हमारे व्यक्तिगत विकास की राह को हमवार करने में योगदान करती रही।

हालाँकि उनकी क़ुर्बत का बहुत मौक़ा नहीं मिला पर जब भी उन्हें देखा तो एक कुशल लीडर और जुझारू तथा मेहनती कार्यकर्ता के रूप में ही पाया। अमूमन ये दोनों ख़ूबियाँ किसी एक इंसान में विरले ही देखने को मिलती हैं। लोग या तो नेता होते हैं जो बहुत कुछ जानते हैं और सबको सिखाने-समझाने की ज़िम्मेदारी के बोझ तले इस क़दर दबे होते हैं कि दूसरों की भावनाओं, मुश्किलों और सोच-समझ पर कभी ध्यान ही नहीं दे पाते। और जो कारकुन होते हैं वे अमूमन ख़ुद को पढ़ने-लिखने और सोचने-विचारने के कामों से मुक्त रखकर बस निर्देशों के पालन में लगे होते हैं। विनोद जी में ये दोनों क्षमताएं एकसाथ देखना आंदोलित भी करता था और प्रेरित भी।

जब उन्होंने एक सरगर्म कारकुन के रूप में अपना सामाजिक जीवन शुरू किया तब हम पहली-दूसरी जमात में रहे होंगे। गंगा मुक्ति आंदोलन, संघर्ष वाहिनी समेत दर्जनों सामाजिक आंदोलनों और अभियानों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाते हुए अर्जित अनुभवों, ज्ञान और कुशलताओं वाले एक इंसान से जब हम मिले तो बिल्कुल अपने जैसा एक जिज्ञासु और जोशो-खरोश से लबरेज़ नौजवान को पाया जो ख़ुद से बहुत छोटी उम्र के लड़के से सीखने की भी क़ुव्वत रखता है और उसे सामाजिक जीवन की आज़माइशों के लिए तैयार करने की भी सलाहियत रखता है।

यह सोचकर कि विनोद रंजन अब हमारे बीच नहीं हैं, एक ऐसे ख़ालीपन का अहसास होता है जो अपने अंदर भी है और सामाजिक दायरों में भी है। ऐसे समय में जब नागरिक संगठन और सभ्य समाज के प्रतिनिधि एक-एक लफ़्ज़ तौलकर बोलने लगे हैं और हर क़दम फूँक-फूँक कर रखते हैं, सामाजिक दायरे में बेबाकी से अपनी राय रखने वाले विनोद जी की कमी तीव्रता से खलती है। पर उनके होने ने उस उम्मीद को भी पैदा किया है कि उनके जैसे लोग भविष्य में भी होते रहेंगे और समाज को अपने सहज नेतृत्व के ज़रिये एक ख़ूबसूरत और पुरअमन दुनिया बनाने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। ■

यादों के झरोखे से

शांति एवं अहिंसा विभाग
राजस्थान सरकार
द्वारा आयोजित

ग्राम सभा फेडरेशन समिति
सदस्यों की छमाही बैठक
(दक्षिणी छोटानागपुर)

श्री ब्रज किशोर प्रसाद